पाँचवाँ अध्याय

उदय प्रकाश की रचनाओं के अन्य पहलू

पाँचवाँ अध्याय
उदय प्रकाश की रचनाओं के अन्य पहलू

समय और परिवेश समकालीन रचनाओं के ऐसे स्वाभाविक गुण हैं, जो यथार्थानुभूति देकर पाठकों को बाँध देते हैं। समकालीन रचनाकारों में उदय प्रकाश समय एवं परिवेश से जुडे हुए रचनाकार है। इसलिए उनकी रचनाओं में समय अपनी पूरी जटिलता के साथ उभर कर आया है। पिछले अध्यायों में उनकी रचनाओं में अभिव्यक्त स्त्री, दलित, आदिवासी, नवउपनिवेशवाद, व्यवस्था विरोध आदि पर विस्तार से विचार किया गया है। इन के अलावा और कई पहलुओं का अनावरण उन्होंने अपनी रचनाओं में किया है। उनका विश्लेषण मुख्यतः इस अध्याय में किया जाएगा।

5.1 घर-परिवार

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। पुराने ज़माने में लोग जंगलों में एक साथ रहते थे। कृषि में लगने के कारण एक स्थान पर रहने की बात सबके मन में पनपने लगी। वहाँ से लेकर घर सबका सपना बन गया। घर से सबका घनिष्ठ संबन्ध होता है। क्योंकि वह मानव जाति के संरक्षण, वंशवर्धन, दैनिक जीवन में आनेवाली वस्तुएँ, हमारी छोटी तकलीफ, त्रास एवं संघर्ष आदि की गंध उसमें मौजूद है। अतः यह एक अनिवार्य संस्था है। इसमें हम सब खुश हैं। आलोच्य रचनाकार उदय

प्रकाश अपने घर के बारे में यों बताते हैं - "....सबसे ज़्यादा खुशी तब मिलती है जब मैं किसी काम के बाद घर वापस लौटता हूँ घर में सबको ठीक ठाक पाता हूँ, खाता हूँ आँख पेट भर सोता हूँ।"[1] अर्थात सब प्रकार की खुशियों का केन्द्र सिर्फ घर ही है। वह हमारी दिशा तय करता है कि हम आगे जाकर क्या या कैसे बनेंगे? आज विस्थापित लोग अपने घर की तलाश में हैं। उदय जी इस पर चिंतित होकर कहते हैं-

"मैं बहुत
डर गया
क्योंकि
अभी भी घर दूर था।"[2]

आज घर-परिवार विस्थापित हो रहे हैं। उदय प्रकाश अपनी रचनाओं में घर-परिवार को जोड़ने की कोशिश करते हैं। उनकी छोटी सी कहानी है 'घर'। विस्थापित होनेवाले लोगों का प्रतिनिधि है कहानी का पात्र। पात्र का कोई नाम कहानी में नहीं, 'उसने' जैसा नाम दिया। हम सब इस कहानी के पात्र के समान नक्शों में अपना मूल घर-गाँव तलाश कर रहे हैं। हमसे वो नदि, पहाड सब छूट गये। अब हमारे पास ऐसा कुछ नहीं बचा सिर्फ नक्शे के बिना। लेकिन कहानी की अंतिम पंक्ति अत्यन्त मर्मस्पर्शी है, देखिए - "...तभी उसने ध्यान दिया - नक्शा जिस देश का था, वह वर्षों पहले खत्म हो चुका था।"[3] यहाँ जादूई यथार्थवाद की

---

1. उदय प्रकाश - अपनी उनकी बात - पृ. 134
2. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - घर की दूरी - पृ. 42
3. उदय प्रकाश - और अंत में प्रार्थना - घर - पृ. 61

कल्पना के रूप में सीमित करना उचित नहीं। क्योंकि यह एक भयावह सत्य है कि हमारे पास अपने मूल घर-गाँव के जो भी नक्शे हैं, वे सचमुच बरसों पहले खत्म हो चुके देशों के हैं। हमारे पास अब देश एवं हमारी संस्कृति या कुछ भी नहीं। कश्मीर के लिए आज भी हम लड रहे हैं, या मर रहे हैं। हम उसकी ओर देख रहे हैं। क्योंकि कश्मीर हमारी संस्कृति का अंग बन गया है।

उदय प्रकाश अपने घर की स्मृतियों की 'आल्बम' हमारे सामने यों खोल देते हैं-

"पिछली और अगली चीजों को
देख सकता था
उसने आल्बम निकाला और
सोचने लगा
बचपन के दिनों में
अम्मा के दिमाग में इतनी
खराब दुनिया न रही होगी
उसने सोचा भी न होगा कि वह
मुझे कहाँ भेज रही है?"[1]

यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि 'खराब दुनिया' का बडा चित्रण उदय जी ने अपनी इस कविता में नहीं दिया। क्योंकि माँ ने बहुत गरीबी में जीवन बिताया लेकिन उनके मन में बच्चों एवं घर परिवार के प्रति स्नेह था। इस कविता के बारे

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - आल्बम - पृ. 36

में अशोक वाजपेयी का कथन देखिए - "....ये कविताएँ कही भी हो सकनेवाली नामहीन कविताएँ नहीं हैं, वे ऐसी कविताएँ जो अपने घर की हैं, हमारे यहाँ की हैं, जो इतिहास के खास बिन्दु पर की हैं।"[1] याने कि उनकी कविताएँ घर की यादों की है।

मानव ने आज अपने कदम इतनी तेज़ी से आगे बढाये कि पीछे अपना गाँव, घर, पुरानी यादें रह गयी। अपने सुखी जीवन तथा समृद्धि के लिए गाँव का खुशहाल वातावरण एवं जीवन त्याग करके परिवार समेत दूसरे शहर में आते वहाँ सुख सुविधाओं की कोई कमी नहीं है। लेकिन वहाँ संवेदनात्मकता की कोई गुंजाइश नहीं।

जबकि सब लोग घर छोड-छोडकर बाहर निकल रहे हैं
जब कि कूच की तैयारी है, सब समान बांध रहे हैं
मैं कह रहा हूँ
मैं घर जाना चाहता हूँ।
जब कि इस वाक्य के सारे हिज्जे
अनिश्चयवाचक हैं
मुझे पता है वे वह अर्थ दे भी नहीं रहे हैं
जो आप ले रहे हैं और जो मैं उन्हें देना
चाहता हूँ
इस समय
सिर्फ मेरा हृदय जानता है
..... अपने घर जाना चाहते हैं।"[2]

---

1. माधव होडा - कविता का पूरा दृश्य - पृ. 96
2. उदय प्रकाश - रात में हार्मोनियम - घर - पृ. 54

भूमंडलीकरण के इस दौर में मानवीय संबन्ध लुप्त हो रहे हैं। उदय जी अपनी रचनाओं के ज़रिए यह बताना चाहते हैं कि विक्षुब्ध एवं विकराल माहौल से वापस आकर अपना घर जाना है क्योंकि वहाँ बडी एवं छोटी बातों में खुशियाँ मिलती हैं। इसलिए कवि का कहना है कि मैं घर जाना चाहता हूँ। अर्थात घर में हमारा अस्तित्व भी है।

'नेलकटर' एक माँ-बच्चे के आत्मीय संबन्ध की कहानी है। वह माँ कैंसर से त्रस्त एवं अंतिम साँस ले रही है। एक ऐसी ही माँ, जिसकी आवाज़ बीमारी ने छीन ली गले में डाक्टरों द्वारा लगाई गई नली से उसकी यांत्रिका सी आवाज़ निकलती है। यह कहानी उदय जी की माँ पर लिखी गई है। इसमें उदय जी ने निजी संसार को सघनता के साथ व्यक्त किया है। खुद उदय जी के लिए ही नहीं बल्कि किसी भी बच्चे के लिए माँ न होने की स्थिति बहुत पीडादायक होती है। लेकिन मृत्यु अनिवार्य है। मृत्यु के उपरान्त उनसे जुडी हुई वस्तुओं की याद आती हैं। 'नेलकटर' कहानी इसका सही दृष्टान्त है। यह नेलकटर इलाहाबाद की कुंभ मेला से पिताजी लाये हैं। उससे बालक (उदय जी) अपनी माँ की मृत्यु के पहले एक रात में उसके नाखून काटता है - "एक घंटा लगा। मैंने उनकी एक उंगली ही नहीं सारी ऊँगलियों के नाखून खूब अच्छे कर दिये। माँ ने अपनी ऊँगलियाँ देखी। यह कितना कमज़ोर और हार का क्षण होता है। जब नाखून जीवन का विश्वास देते हैं। कितने सुन्दर और चिकने नाखून हो गये थे।"[1] 'नाखून बढाना' का कार्य भविष्य

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - नेलकटर - पृ. 8

की ओर सूचित करता है। लेकिन माँ का नाखून बेटे के द्वारा काटने की प्रक्रिया से माँ के जीवन के अंत को सूचित करता है। अपनी माँ की स्मृति उदय जी को जीने की प्रेरणा देती है और वह उसके लिए सबल बनती है। - इस प्रकार 'मूँगा, धागा आम का बौर', 'मौसाजी' और 'रुक्कू' जैसी कहानियो में घर-परिवार के रिश्ते-नाते का महत्व और उसके ज़रिए मानवीय संबन्धों एवं मानवीय मूल्यों पर विचार किया गया। घर का मूल्य एवं संवेदनाओं से बंधित उस सामाजिक इकाई को उदय प्रकाश बडा स्थान देते हैं। वही घर समाज और देश का सबसे सशक्त बुनियाद बनता है। लेकिन आज वह केवल मकान में बदल रहा है। वहाँ सेवेदनाओं का अटूट रिश्ता नहीं रूपायित होता है। इसलिए वे पूछ रहे हैं-

"मैं जिस मकान में हूँ वह कोई घर है या मिजी गालिब की मज़ार?"[1]

माँ के समान घर को घर बनाने में पिता का हिस्सा बडा है। उदय प्रकाश की रचनाएँ पिता को प्रमुख स्थान देती हैं। वह दरियाई घोडा, अमानवीयता का शिकार, बचपन के संरक्षक और सामंती व्यवस्था से त्रस्त आम आदमी जैसे अनेक रूपों में हमारे सामने आता है। पिता के साथ बिताये गये बचपन की यादों में वे लिखते हैं-

"पिता
झाड-झारवाड, घाटियों और पत्थरों से भरे
चटियल मैदान थे

---

1. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ करती है - घर या मज़ार - पृ. 36

पिता सागौन, शीशम, बबूल, तेंदुओं और हिरनों से भरे
बीहड थे
बचपन में अकसर
किसी ऊँचे टीले पर चढकर
मैं आसपास के गाँवों में ललकार दिया करता था
बचपन में
पिता के कन्धे पर बैठकर
मैं बाज़ार घूमने जाता था
पिता पहाड की तरह
चलते भीड के बीच
उनके कन्धों पर मैं
जंगली तोते की तरह बैठा रहता।"[1]

यहाँ उदय जी की स्मृतियों के साथ हम सबकी स्मृतियाँ जाग उठती हैं। बचपन में हम पिता के कन्धों पर बैठनेवाले तोते थे। उससे हम सुरक्षा अनुभव करते थे। लेकिन उस पिता के बारे में हम सोचते भी नहीं। वह हर प्रकार के शोषण एवं संघर्ष में जीने पर भी अपने बच्चों को सुखमय जीवन देना चाहता है। संघर्ष एवं शोषण के शिकार होनेवाले पिता पर वे यों प्रकाश डालते हैं-

"नहीं वह तुम्हारा नगर नहीं या पिता
दाखिल हुए थे तुम जहाँ

---

1. उदय प्रकाश - सुनोकारीगर, पिता - पृ. 14

अपने औजारों का झोला कन्धे पर लटकाये
नीव में डाल गये पत्थरों की दीवार में
चूने मिट्टी का गोरा भरते
एक एक इंट को सजा कर
दीवार उठाते तुम्हारी उम्र जहाँ गुजारी थी
वह दीवार वह खिडकी
वह इमारत तुम्हारी नहीं थी पिता
जिसे तुम बुखारे जैसी गहरी आत्मीयता में डूबकर थरथरात
अपना घर कहते
पिता नहीं थी
नहीं थी पिता
वह तुम्हारी अपनी लडाई जिसमें तुम
बरछे को मुस्तैदी थामे
हत्याएँ टोहते रहे
जूझते रहे गुफाओं और सुरंगों में बारुद भरते
गडा से गुस्से में
पत्थर पर माँजते
तुम लगातार अथाह घृणा में डूबे"[1]

पिताजी ने अपना सबकुछ नष्ट करके एक अलग संसार तैयार किया। वहाँ संतोष, शांति एवं सबकुछ था। आज ये सब नयी सभ्यता ने नष्ट कर दिया।

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - पिता - पृ. 28

'पिता' उपभोग की चीज़ बन गया। 'दरियाई घोडा' कहानी में दादा गरियाई घोडा है। यह उदय जी की अपनी कहानी है। यह आत्मकथात्मक शैली में लिखी गयी कहानी है। 'मैं' के बचपन में गले के दोनों सिरों में उँगली डालकर वह जो आवाज़ करते थे वह दरियाई घोडे की तरह होती थी वैसे वह हनुमान और न जाने क्या-क्या रूप धारण कर बच्चों के साथ खेलकर बच्चे जैसे बन जाते थे। वही दादा आज आस्पताल में पडा है, कैंसर के कारण इनका एक गाल गले के पिछले भाग तक काट दिया गया है। जिसकी वजह से वह कुछ भी बोल नहीं पाता। कभी थोडी बहुत कोशिश करता भी है तो उनका स्वर निकलता है, वह उसी की तरह होता है जब वह दरियाई घोडा बनता था। आस्पताल में 'मैं' को पूरा समय न था क्योंकि कालेज खुलने का समय आ गया है। उस समय पिता को उसी हालत में छोडकर लौटना होता है। जब वह रेलगाडी के इंतज़ार में प्लाटफार्म पर पहुँच जाता है तब उसके मन में दादा के नाखून की याद आती है, - "....तब याद आया कि दादा के नाखून बहुत बढ गये थे और उनमें मैल भरा हुआ था। मैंने अपने मुँह के दोनों छोरों पर ऊँगलियाँ फंसाई, उन्हें खींचा... और मेरा जबडा फैल गया। दरियाई घोडे की तरह। मैं फूट-फूट कर रो रहा था, प्लाटफार्म पर। भीड के बीच अब तमाशा था मैं।"[1] इस प्रकार अपने पिताजी के प्रति जो प्यार है वह उनकी मृत्यु के बाद भी उदय प्रकाश संभालकर रखते हैं। 'तिरिछ' कहानी भी इससे दूर नहीं। इस कहानी में घर में सम्मानित पिता परिवार के लिए सुरक्षा के दुर्ग की तरह होता है और पूरा परिवार उस पर गर्व करता है। लेकिन जीवन में कुछ घटनाएँ या दुर्घटनाएँ ऐसी

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - परछाई - पृ. 134-135

होती हैं कि सम्मानित व्यक्ति भी तिरस्कार का शिकार बन जायेगा। 'तिरिछ' कहानी में इसी भयावह दौर से गुजरनेवाले एक पिता का जिक्र है।

भाई के साथ हमारा संबन्ध खून का है। इसलिए भाई के दूर रहने पर भी भाई ही है। आज नौकरी की तलाश या अन्य अनेक कारणों से भाई दूर चला जाता तो भी वह रिश्ता नष्ट किए बिना उसकी सघनता को बनाया रखता है। उदय प्रकाश अपनी 'परछाई' शीर्षक कविता में कहते हैं-

"....मीलों लम्बी तुम्हारे जीवन की सडक पर
जब कोई न होगा अपना जो लगे
दूर-दूर
हम छाँह देंगे भइया तुम्हारी थकान तुम्हारी फिक्र को
अंगार से दहकते तुम्हारे माथे को हम
सहलाएंगे अपनी चोट खायी उंगलियों से।"[1]

हम सब जानते हैं कि पारिवारिक संबन्धों की आर्द्रता है भारतीय मूल्यबोध की आधारशिला। भातृत्व के बिना पारिवारिकता पूर्ण नहीं होती। दुर्दिनों में सहज हँसी की ताकत से भाई का दुःख कम हो जाता है। भाई केवल एक का नहीं, संपूर्ण भारत का भाई है। इसलिए सभी भाइयों के दुःखों को हमारे घर के दुःख के रूप में मानना चाहिए। तभी यहाँ स्वच्छ एवं शांतिपूर्ण समाज संभव होगा।

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - परछाई - पृ. 134-135

उदय प्रकाश 'अपराध' नामक अपनी कहानी में दो भाइयों के बीच के आपसी प्रेम की चर्चा करते हैं। पोलियोग्रस्त अपाहिज और छह साल बडे भाई के भाईचारे की यह कहानी छोटे भाई के बयान द्वारा प्रस्तुत है। बडा भाई हमेशा छोटे के साथ रहता है और उससे बहुत स्नेह करता है। लेकिन एक दिन खेल में बडे ने छोटे की जो उपेक्षा की उसका नतीजा यह हुआ कि छोटे ने गलती से खुद सिर में चोट लगा ली और घर पर माँ से बताया कि बडे भाई ने मारा। इस पर पिता बडे भाई की बुरी तरह पिटाई करता है तब बडा भाई उम्मीद करता है कि छोटा भाई सच बोल दे। लेकिन यह नहीं होता। उदय जी के मन में बरसों पुराने बचपन में हुई इस घटना के संबन्ध में आज भी वह अपराधबोध के शिकार बनते हैं। अब बडे भाई को याद नहीं कि ऐसा कुछ हुआ भी था। इस कहानी की अंतिम पंक्तियों में उनका संवेदन शील कलेजा हम देख सकते हैं - "तो इस अपराध के लिए मुझे क्षमा कौन कर सकता है?.... वह गलत और अन्याय पूर्ण था, लेकिन जिसे अब बदला नहीं जा सकता? और क्या यह ऐसा अपराध नहीं है जिसे कभी भी क्षमा नहीं किया जा सकता? क्योंकि इससे मुक्ति असंभव हो चुकी है।"[1]

सारांश यह है कि उदय जी संवेदनशील रिश्तों को अपनी रचनाओं में आत्मीय ढंग से व्यक्त करते हैं। आज हम आत्मीय संबन्धों से दूर हो रहे हैं। इन आत्मीय संबन्धों को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने के लिए रचनाकार स्मृतियों का सहारा लेते हैं।

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - अपराध - पृ. 14

5.2 बेरोज़गारी

जनसंख्या वृद्धि के कारण बेरोज़गारी की समस्याएँ दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं। पूरे भारत में पढे-लिखे लोग घूम रहे हैं। उनका कोई विकल्प नहीं है। बेरोज़गारी के फलस्वरूप समाज में कई प्रकार की अहित घटनाएँ चल रही हैं। आत्महत्या, पारिवारिक विघटन, बाल-बच्चे के कुपोषण से मृत्यु एवं दिग्भ्रमित अवस्था आदि समस्याएँ बढ रही हैं। वास्तव में ये सब विकास के सामने बाधा बन जाते हैं। सभी माता-पितायें अपने बच्चों को शिक्षा देकर ऊँचे-डाँचे पदों पर आरूढ करके देखना चाहते हैं। संतानों तो उसे हासिल करने के लिए कोशिश तो करती हैं। लेकिन वहाँ तक पहुँच गए तो वे कई प्रकार की मनोग्रंथियों की शिकार बनती हैं। उदय जी अपनी लंबी कहानी 'मोहनदास' में इसकी ओर इशारा करते हैं - "मोहनदास का दिल धडक रहा था। एक अनहोनी होने जा रही थी। अब बहुत जल्द उसके जीवन की अब तक कि अनिश्चितताओं का अंत होने जा रहा था। हर महीने उसे तनख्वाह मिला करेंगी। घर में हर रोज चूल्हा जलेगा और तरकारी बनेगी। बाप और माँ का इलाज चलेगा। देवदास की परिवेश और पढाई ठीक होगी, कस्तूरी को मज़बूरी में दूसरों के यहाँ नहीं रखना पडेगा।"[1] मोहनदास जैसे अनेक पढे-लिखे लोग ऐसा सपना देखते हैं। लेकिन अगर नौकरी न मिले तो उनका सब कुछ जैसे परिवार, सपना, मित्रता आदि चूर चूर हो जाएगा।

उदय जी की खास विशेषता यह है कि अपनी रचनाओं में अपना जीवनानुभव व्यक्त करते हैं। वे भी बेरोज़गारी के शिकार हैं। लेकिन आज नौकरी मिलने पर भी

---

1. उदय प्रकाश - मोहनदास - पृ. 18-19

बेरोज़गारी की भीषणता को वे भूलते नहीं। अपनी कविताओं में इन समस्याओं से जूझनेवाले हर एक व्यक्ति के लिए वे लिखते हैं-

"सबसे अच्छे दिन हैं
ये मेरे
दोस्तों के खूब सारे पात्र हैं
प्यारे भरे
बचपन की भयहीन
स्वतंत्र उमंगें है
नौकरी मिली है और थोडे से
रुपये जिनसे
अपनी पसंद की किताबें और
अन्तर्दर्शी खरीद सकता हूँ मैं
चाय पिला सकता हूँ
दोस्तों को (सबसे अच्छे दिन)

x x x

नये जन्म बच्चे की तरह
वह मेरी हथेली पर गिरा
किसी महत्वपूर्ण घटना की तरह था
इसका गिरना मेरी हथेलियों पर
मैंने मुट्ठियों में उसे जोरों से भीच लिया

x x x

मैंने अपनी पत्नी के सौकडों वर्षा

उसके चेहरे से पोंछ दिया
बच्चों के दुविधा दाँतों की तरह
खुश और चमकदार
हमें यकायक लगने लगा
कि उसमें हमारे अपने शरीर की गंध है
उसकी खनखनाहट में हमारे पिछले दिनों की थकान
गूँज रही है (पैसा)।"[1]

सारांश यह है कि नौकरी मिलने पर आपसी संबन्धों में खुशी आती है। दुर्दिनों में हमें रोने की आवश्यकता तो नहीं, क्योंकि सुख-दुःख मिश्रित है जीवन। उदय जी की आशावादी दृष्टि यहाँ द्रष्टव्य है।

आज की शिक्षा नीति से बेरोज़गारी बढती जाती है। इसलिए आज की युवापीढ़ी बेरोज़गारी जैसी खतरनाक समस्या का शिकार बन गयी। फलस्वरूप वे दिशाहीन होकर घूम रहे हैं। इस कटुयथार्थ को उदय प्रकाश जी ने मोहनदास कहानी में दर्ज किया है - "...आँखों की चमक बुझने लगती है। फिर जैसे किसी गहरे खोह में से भर्राई उसकी आवाज़ बाहर निकलती है। ....हम भी तो बि.ए. फस्ट क्लास हैं। दिन रात घोंटते थे....। क्या हुआ?"[2] शिक्षित होने पर भी बेरोजगारी की आग में अनेक मोहनदास तडप रहे हैं। उनके मन में अनेक आशाएँ होती हैं। यदि इन आशाओं की पूर्ति नहीं है तो वे आत्महत्याएँ करते हैं। इस

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर, सबसे अच्छे दिन - पृ. 98, 85
2. उदय प्रकाश - मोहनदास - पृ. 10

वास्तविकता को उदय प्रकाश 'मोहनदास' कहानी में यों उद्‌घाटित करते हैं - "उसके बडे भाई श्रीवर्द्धन सोनी ने बी.ई. की परीक्षा में टॉप किया था और इंजीनियरिंग की डिग्री के बावजूद छह वर्षों तक खिंची बेरोजगारी से हताश होकर पाँच साल पहले एक रात, अपने कमरे में सीलिंग फैन में रस्सी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली थी। बाज़ार में छोटी-सी दुकान चलानेवाले बूढे पिता और मिडिल स्कूल की मास्टरी करनेवाली माँ के बेटे हर्षवर्द्धन सीती की स्मृति में अपने भाई द्वारा आत्महत्या की घटना एक ऐसा गहरा नासूर था कि पढ़ाई के दौरान ही वह छात्र आंदोलन आदि में हिस्सा लेने लगा था।"[1] अर्थात निम्न तबके के घर-परिवारों में दिन-ब-दिन ऐसी घटनाएँ हो रही हैं। क्योंकि उनके पास पैसा एवं पवर नहीं है। आज Money and Power के बिना सब दुर्बल होते जा रहे हैं।

5.3 शिक्षा का औद्योगीकरण

भूमंडलीकरण के इस दौर में सब का निजीकरण हो रहा है। शिक्षा भी इससे दूर नहीं है। उदय प्रकाश अपनी कहानी 'पीली छतरीवाली लडकी' में इस पर विचार किया है। कहानी में निखलाणी नामक एक पात्र है। वह पूँजीवाद या अइ.एम.एफ (IMF) का प्रतिनिधि है। वह सब का प्राइवटइसेशन करने के लिए प्रधानमंत्री से कहता है - "इत्ती देर क्यों कर दी... साई ! जल्दी करो ! पाँवर आई.टी फूट, हेल्थ, एजुकेशन... सब ! जल्दी करो ! सबको प्रायवेटाइज करो साई !... ज़रा क्विक। और पब्लिक सेक्टर का शेयर बेचो... डिसएन्वेस्ट करो... हमको सब

---

1. उदय प्रकाश - मोहनदास - पृ. 63-65

खरीदना है... साई...।"[1] अर्थात निखलाणी जैसे अनेक नवउपनिवेश की शक्तियाँ प्रायवटइसेशन के ज़रिए राष्ट्रों की वृद्धि चाहता है। उसके लिए उदारीकरण की फूटनीति को अपनाया जाता है। वह दूसरी तरफ जनता का सब कुछ लूटा जाता है। शिक्षा के औद्योगीकरण से अमीर विद्यार्थियों को सही शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है। आज विद्यालयों में फैशन शो एवं ब्यूटी काटेंस्ट का आयोजन हो रहा है। यह तो शिक्षा का व्यवसायीकरण करके पैसा वसूल करने का तरीका है। इसका ज़िक्र 'पीली छतरीवाली लडकी' में है। एक विद्यार्थी की आत्महत्या करने पर हमदर्दी न जताते हुए ब्यूटीकोंटेस्ट पर चिंतित एक ऐसे वर्ग को, हमारे सामने पेश किया जाता है "....उसी वजह से हमने यूनिवसिटी में दस सितंबर को होनेवाला फैशन शो और कल्चरल प्रोग्राम पोस्टपोन किया... इसमें यूनिवर्सिटी को आठ लाख घाटा हुआ। हमने स्पोसर्स से बात की थी। एक अच्छा खासा रेवेन्यू हमें मिलता। मेरी बडी अच्छी योजनाएँ हैं।"[2] अर्थात पूरी तरह बाज़ारवादी सोच शिक्षा जगत में व्याप्त है। युवापीढ़ी पथभ्रष्ट हो रही है। यह एक खतरनाक स्थिति है। अनेक अध्यापक अध्यापन को एक पवित्र काम मानते हैं। फिर भी इस खतरनाक स्थिति से बचाने के लिए शिक्षित लोग विदेशों में चले जाते हैं। क्योंकि उनके विचार में यह धारणा है कि वहाँ सब कुछ ठीक है। आलोच्य कहानी में डॉ. वाट्सन आस्ट्रेलिया चला जाता है। यह खबर सुनकर कार्तिकेय गुस्से में कहता है -

---

1. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 13
2. वही - पृ. 92

"...कौन नहीं डरा हुआ है?... कोई सेफ है यहाँ।"[1] अर्थात यहाँ कोई भी सेफ नहीं है। युवापीढ़ी पश्चिमी सभ्यता के पीछे जाकर यूनिवेसिटी को भी एक बाज़ार का रूप देती है। पश्चिम के अंधाधुंध अनुकरण करनेवाले विद्यार्थियों का खुलासा यों हुआ है - "ग्रीटिंग्स, कार्डस, केक्स और गिफ्ट आयटम्स की एक बडी सी दूकान यूनिवर्सिटी के सुपर मार्केट के बगल में खुल गयी थी। सिगरेट और पान की चार दूकानें कैंपस में ही थी। एक तो हास्टल्स के सामने ही यहाँ आयुर्वेदिक औषधि के नाम पर बननेवाली भाग को गोली, मधुर मुनक्का से लेकर गंजा-चरस और ब्रउन शुगर या सफेद पावडर बिकने लगा था। देशी-विदेशी कंडोम, काट्रासेण्टिव गोलियाँ, बिलकुल आम हो गयी थी। एडस के पोस्टर्स और नारे अल्ट्रासउंड और गर्भपात के विज्ञापन जगह-जगह थे।"[2] इसी प्रकार के भयावह वातावरण से युक्त यूनिवर्सिटी के छात्रों की स्थिति उदय प्रकाश हमारे सामने दिखाते हैं। चारित्रिक पतन से गुज़रनेवाले हमारी युवापीढि का भविष्य क्या होगा?

उदय प्रकाश हमारे समय के अच्छे आलोचक भी हैं। इसलिए उनका नज़रिया एक दम सही है। आज पब्लिक स्कूल हर कहीं दिखाई दे रहे हैं। उदय जी इसके बारे में कहते हैं - "पब्लिक स्कूल कुकुरमुत्तों की तरह उग रहे थे और जमकर कमाई कर रहे थे।"[3] याने कि पब्लिक स्कूल सब कहीं है। वहाँ के फीस अधिक हैं। अमीर लागों के बच्चे वहाँ पढते हैं। निम्न लोगों के बच्चे वहाँ से एक

---

1. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 130-131
2. वही - पृ. 132
3. वही - पृ. 152

हद तक दूर हैं। फिर भी अपने बच्चों को भी पब्लिक स्कूलों में सिखाना वे चाहते हैं। पैसा कमाने के लिए दिन-रात मेहनत करते हैं। अनेक प्रकार के संघर्षों से वे जूझ रहे हैं, उनकी तबियत बिगड जाती है। उदय जी इस संघर्ष से त्रस्त लोगों को हमारे सामने पेश करने में हिचकते नहीं। अपनी चर्चित कहानी 'मैंगोसिल' में शोभा इस समस्या की प्रतिनिधि है। शोभा से उसका बच्चा कहती है - 'मम्मी तुम अमर की फीस के लिए अपनी आँख की रोशनी बेच रही हो। आँख बचानी हो। आँख बचानी हो तो उसे सस्ते स्कूल में डाल दो।"[1] अर्थात हमारी शैक्षिक व्यवस्था अत्यन्त शोचनीय है। करोडपतियाँ अपने काले धन को छिपाने के लिए, पब्लिक स्कूलों को स्थापित करते हैं। सरकारी स्कूलों में फीस नहीं, दोपहर को भोजन मिलता है। वहाँ योग्य अध्यापक पढाते हैं। सरकारी स्कूलों में छात्रों को पढाने की आवश्यकता है। अगर लोग सरकारी स्कूलों में बच्चों को पढाते हैं तो गैर सरकारी स्कूल का अस्तित्व नष्ट हो जाएगा।

5.4 साम्प्रदायिकता

आज हमारे धार्मिक मूल्यों में महत्वपूर्ण परिवर्तन आ गया है। इसके तहत विश्व में संघर्ष होता जा रहा है। हमारे देश में साम्प्रदायिकता की लहरें फैली हैं। भारत-पाक विभाजन, अयोध्याकांड, कश्मीर प्रश्न आदि इसका मिसाल है। बाहर से एक राष्ट्र के रूप में दिखाई पडनेवाला भारत अंदर ही अंदर विघटित होता जा रहा है। विघटित करनेवालों की अपनी दृष्टि है, विचारधारा है और अपनी

---

1. उदय प्रकाश - मैगोसिल - पृ. 152

मानसिकता है। इसी कारण से धर्म का मूल स्वार्थ लोलुप व्यक्तियों की सिद्धि का साधन बन गया है। इस अवसर पर अभयकुमार दुबे का विचार समीचीन होगा - "साम्प्रदायिकता एक ऐसी विचारधारा है जो कभी खुद को साम्प्रदायिकता की संज्ञा देना पसंद नहीं करती। वह धर्मनिरपेक्षता के खोखले दावों, शब्दवाद के झूठे ऐतिहासिक तथ्यों और लोकतंत्र का कानून सम्मत शासन से छिपि रहती है।"[1] अर्थात साम्प्रदायिकता को बढावा देने के लिए पर्याप्त सीमा राजनीतिक सत्ता के पास है। वो साम्प्रदायिक हिंसा को आधार बनाकर सत्ता पद पर आसीन हैं। राजनेताओं की षड्यंत्रकारी नज़रिया के प्रति उदय जी का प्रतिरोध देखिए-

"उस रात
यमुना में आग लगी हुई थी उस रात
तिलकनगार, वजीरपुर, मुनीरका, अशोक विहार हर तरफ आग थी
.....क्या क्या मैंने देखा रात-भर के जीवन में
डर लग रहा था, उस बस में मेरे साथ सारे जले हुए मुसाफिर।"[2]

भारत में सांप्रदायिक दंगे हमने आँखों से देखे हैं। गुजरात में 'कैसर बानो' के गर्भ को चीरकर उसके साथ रेप करके, उसके माथे पर 'ओम' खून से लिखा गया था। इन सभी अमानवीयता से उदय जी दुःखी हैं। दुःखी होकर अपने दायित्वों से मुँह मोडना ठीक नहीं है। इसलिए प्रतिरोध जाहिर करना रचनाकार का दायित्व है। वे साहसी होकर नये इंकलाब का आह्वान यों देते हैं-

---

1. डॉ. एन. मोहनन - समकालीन हिन्दी कहानी - पृ. 31
2. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ करती है, आग - पृ. 67

"सबसे मुकद्धम
सबसे पवित्र आवाज की हिफाजत में
एक सच्चा जोहाद... एक धर्म युद्ध
एक नया इंकलाब
फौसरबानों के
उस अजन्मे की आवाज़
सारी कायनात
समू सृष्टि
सारे हर्फो... सारी लिपियों में
हिन्दी की सारी किताबों में
गूँजेगी वो आवाज़
समूचे व्योम में सदा... सदा...
कैसर बानो के
उस अजन्में की आवाज
सदा... सदा...।"[1]

इस पृथ्वी में जन्म लेने के पहले मरे अनेक बच्चों की आवाज़ चारों ओर गूँज रही है। यह आवाज़ उन बच्चों का प्रतिरोध है। साम्प्रदायिक शक्तियों से लडने के लिए एक सच्चा धर्म युद्ध या जिहाद की अनिवार्यता है। साम्प्रदायिक दंगे के समय अनेक लोग मर जाते हैं। मरनेवाले लोगों से भयभीत हैं जिंदा रहनेवाले लोग। गुजरात हत्याकांड के समय और आज भी हमारे मन में 'फरीदुद्दीन' का चित्र

---

1. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ करती है, ध्रुपद - पृ. 85

जाने अनजाने आता है। उनके जैसे असहाय एवं भयावह चेहरे सब कहीं हम देख सकते हैं। उदय जी साम्प्रदायिक दंगे के जीवित स्मारकों को शक्ति देकर यों कहते हैं-

"जिया फरीदुद्दीन डांगर
सबसे मुकद्धस
गंगा से निर्मल
पवित्रम
अनहद नाद
हम करेंगे धर्म युद्ध
एक सच्चा जोहाद
काफिरों के... दरिदे के... शैतान के कारिदों के खिलाफ
एक रिवल्यूशन
...एक सच्चा इंकलाब।
आमीन।"[1]

अर्थात् रचनाकार होने के नाते पाठकों को नये धर्मयुद्ध के सच्चे जोहाद के लिए अमंत्रित करते हैं। यह धर्मयुद्ध केवल एक धर्म के विरुद्ध नहीं। सम्पूर्ण शैतान के कारिंदों के खिलाफ है। उदय जी बताते हैं - "....कोई सोच भी नहीं सकता कि बडी और गंभीर घटनाएँ जिस बिन्दु से शुरू होती हैं वह अक्सर एक बहुत मामूली, नगण्य और हास्यास्पद बिन्दु होता है।"[2] अर्थात इस प्रकार हास्यास्पद

---

1. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ करती है, आग - पृ. 86
2. उदय प्रकाश - अरेबा-फरेबा - और अंत में प्रार्थना - पृ. 265

बिंदु से सांप्रदायिक दंगे की ओर जा रही है आज की जनता। उदय जी की कहानी 'और अंत में प्रार्थना' हास्यास्पद बिन्दु से शुरू होकर साम्प्रदायिक दंगे की ओर जाकर भीषण रूप धारण करती है। कोतमा के महात्मा गाँधी इंटर कालेज में ग्यारह वीं कक्षा में पढनेवाला नितिश शर्मा, बारहवीं कक्षा में पढनेवाला। मुकेश यादव दोनों ने मिलकर मोतीलाल ठाकरवाणी से जूता खरीदा। लेकिन उनके दाम में फरक था, एक ने तो एक सौ साठ रुपये और दूसरे ने एक सौ बाइस रुपए के खरीदे। जूता एक ही ब्रांड का था। जूते के बारे में दोनों के बीच में बातचीत हुई। दोनों मोतीलाल ठाकरवाणी की दूकान की ओर चले गए। मोतीलाल ने कहा कि दोनों की क्वालिटी में बडा फर्क है। एक नकली जूता है और दूसरा कंपनीका जेनुइन माल है। छात्रों ने जूता उतारकर उसके मुँह पर मार दिया। अन्य दूकानदार वहाँ इकट्ठे होने लगे। उनके बीच गुलाम चंद फुदनानी था। वह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का सदस्य था। उन्होंने कहा - "मारों सालों को। पकडो। जाने न पाए। गुंडागर्दी मचा रखी है...।"[1] दोनों के स्टेशन में ले गया। सिधियों एवं पुलीसवालों ने दो लडकों को मारा। कॉलेज के छात्र ने इकट्ठा होकर एड डी एवं गुप्ता के बगल की ओर जुलूस निकाला। इसका नेतृत्व तौफीक अहमद ने लिया। वह सांप्रदायिक शति समिति का सदस्य था। यह सीमित तब बनी थी जब अयोध्या में मंदिर-मस्जिद को लेकर तनाव पैदा किया जा रहा था। तौफीक सबको शांत बनाने की कोशिश कर रहा था। लेकिन डिविजनल 'मजिस्ट्रेट के आर्डर के अनुसार नैतिकता पर गोली मारी गई। लेकिन व्यवस्था ने बताया - "तौफीक की हेथ पत्थर

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - और अंत में प्रार्थना - पृ. 266-267

लगने से दिखानी है। स्टोन इंज्युरी।"[1] इस हत्या के बाद उनके घर परिवारों की स्थिति बहुत शोचनीय बन गई। एस.पी ने कहा - "कोतमा में जो कुछ हुआ उसकी जूते के लिए हुआ...? दुनिया इतनी आसान नहीं रह गई है...तौफीक विरोधी पार्टियों का एजेंट प्रोवोकेटुयोर था... वह जूते के लिए नहीं, भोपाल में साहब और अयोध्या के बाबरी मस्जिद के लिए मौजूद था....।"[2] वास्तव में तौफीक किसी पार्टियों का एजन्ट नहीं था, वह छात्र था। लेकिन षड्यंत्र कारी सत्ता इस हत्या को उचित मानती है। सत्ता कहती है - "एड आई कौन प्रूव इट ! इट वाज़ अ वेल प्लांड हुलिगनिज्म...! इन लोगों को इसी तरह ठीक करना पडेगा...।"[3] याने कि व्यवस्था सब घटनाओं को अपने अनुकूल बना सकती है। साम्प्रदायिकता के खिलाफ असली लडाई राष्ट्रवाद के धरातल पर लडनी होगी। लेकिन आज के राष्ट्रवाद का उदय जी अनुकूल नहीं हैं। क्योंकि वे कहते हैं - "हिन्दू साम्प्रदायिकता तो राष्ट्रवाद है मगर मुस्लिम, सिख और ईसाई साम्प्रदायिकताओं को वो राष्ट्रविरोधी करार देते हैं। 'राष्ट्रवाद' की आज की परिभाषा उदय जी यों देते हैं - "कोई दूसरे धर्मवेषधारी लोग थे, जिनका 'राष्ट्रवाद' मुसलमानों से नफरत और अंग्रेज़ी की चापलूसी के सिद्धान्त के सामने हथियार उठाता था और पश्चिम के नवऔपनिवेशिक ताकतों के सामने अपनी पूँछ निकाल कर हिलाना शुरू कर देता था।"[4] अर्थात पश्चिमी सभ्यता के पीछे आज हम 'राष्ट्रवाद' का नारा लेकर उनकी दया की प्रतीक्षा में हैं।

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - और अंत में प्रार्थना - पृ. 281
2. वही - पृ. 281
3. वही - पृ. 281
4. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 64

उस समय हमारे यहाँ साम्प्रदायिकता के फलस्वरूप संस्कृतियाँ नष्ट हो रही हैं। उदय जी इस भयावह स्थिति बयान 'तीली' नामक कविता के द्वारा में देते हैं।

"सबसे सरल है
सबसे सरल मुश्किल और महान् चीजों को नष्ट करना
सिर्फ एक तीली
इतिहास की सबसे प्राचीन और दुर्लभ
पांडुलिपि का राख बना देने के लिए
एक तील
अब तक पडी न जा सकी, लुप्त सभ्यताओं की
अज्ञात लिपियों की राख
किसी मिथक-नायक के शैर्य और शोक को राख
किसी समाज के स्मृति कोष, किसी समुदाय के प्राकबिंबों को राख
किसी समूह की अस्मिता
किसी गरीब घर
किसी आस्था के ईश्धर
किसी धर्म के पैगम्बर को राख
सिर्फ एक तीली चाहिए
किसी चिंपाजी, किसी गुंडे या गुरिल्ला की
एक जरा सी हरकत

x x x x

डेढ किलो का माटिया कोटे का एक धन
यापत्य के इतिहास में संगमरमर के

सबसे जहीन सबसे अद्‌भुत गुम्बद को मलबे में बदलने के लिए
एक अंधेरा का ढला हुआ सीमा
किसी कवि किसी सन्यासी, किसी सुफी, किसी मुहफर जोकर
किसी विरोधी को राजधानी की सडक पर सदा के लिए
चुप और ठंडा करने के लिए
सबसे संक्षिप्त और सबसे सरल है
सबसे लम्बी और जटिल प्रक्रिया में बनी
चीजों को खत्म करना।"[1]

उदय जी ने 'तीली' को सबको जलाने की ताकत के रूप में चित्रित किया है। कभी-कभी साम्प्रदायिक दंगों का कारण भी छोटी बात होगा। दंगे के दौरान यह मामूली बात एक खतरनाक रूप धारण करती है। सब कहीं अराजकता ही अराजकता है। मानव विरोधी शक्तियाँ इस देश को गेधरा, कश्मीर और पंजाब बना सकती है। उदय जी कहते हैं-

"आओ इस देश के शान्त से लगते
और खतरों के बाहर पडे किसी इलाके को
एक और पंजाब बनाये
और देखें
कि आखिर कैसे बनाया जाता है पंजाब।"[2]

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम, तीली - पृ. 65
2. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम, पंजाब : कुछ कविताएँ - पृ. 83

अर्थात एक राष्ट्र को और वहाँ की संस्कृति को नष्ट करके पुनः राज्य की स्थापना मुश्किल की बात है। क्योंकि वहाँ एक ओर संस्कृति पुनः बनानी है। यह शायद विकलांगों, असहायकों, शोषित स्त्रियों एवं कुपोषण से पीडित बच्चों के होगा। यह दुःखद स्थिति है। इसलिए राष्ट्रवाद के महान उद्देश्य को बनाए रखने के लिए सांप्रदायिकता के बीज को नष्ट करना चाहिए।

5.5 प्रेम

प्रेम तो आदिम राग एवं अनिवार्य सत्य भी है। उसमें बेचैनी एवं तडप है। फिर भी प्रेम मुलायम है, पवित्र भी। उदय जी प्रेम को अनेक रूपों में देखते हैं-

"ऐसा करता हूँ कि मैं
अखरोट बन जाता है
तुम उसे चुग लो और
किसी कोने में छुपकर तोडो
गेहूँ का दाना बन जाता हूँ मैं
तुम धूप बन जाओ
मिट्टी हवा पानी बनकर
मुझे उगाओ
मेरे भीतर के रिक्त कोषों में
लुका छिपी खेलो या कोंपल होकर
मेरी किसी भी गाँठ से
कहीं से भी तुरंत फुट जाओ।"[1]

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर, कुछ बन जाते हैं - पृ. 11-12

प्रेमि प्रेमिका के पास पहुँचने के लिए बेचैन है। उनका मिलन सुखमय दर्शन है। पुराने समय में प्रेम भी सामन्ती व्यवस्था के हाथ में था। यह एक दुःखद स्थिति थी। दुःख भय से उत्पन्न होता है। यह अज्ञात भय एवं प्रेमावेग दोनों का चित्रण एक साथ उदय ने किया है-

"हम अगर यहाँ न होते आज तो
कहाँ होते ताप्ती?
होते कहीं किसी नदी पार के गाँव के
किसी पुराने कुएँ में
डूबे होते किसी बहुत पुराने पीतल के
लोटे की तरह
जिस पर कभी कभी धूप भी आती
और हमारे ऊपर किसी का भी नाम लिखा होता
या फिर होते हम कहीं भी
किसी भी फिर तरह के साथ साथ रह लेते
ढो ढेलों की तरह हार बारिश में धुलेत
हर दोपहर गरमते
x x x
क्या हम कभी कभी
किसी और तरह से होने के लिए रोते ताप्ती?"[1]

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - एक शहर को छोडते हुए आठ कविताएँ - पृ. 24

यहाँ 'ताप्ती' को प्रेमिका का आलम्बन मानकर प्रेम की कल्पना अत्यन्त सुन्दर ढंग से उदय जी ने किया है। यहाँ भय से प्रेमि पूछता है - "क्या हम कभी-कभी किसी और तरह से होने के लिए रोते ताप्ती? लेकिन उदय जी सामंती शक्ति के विरुद्ध आवाज़ उठाने की ऊर्जा देकर यों कहते हैं-

"ताप्ती, एक बात है कि
एक बार मैं जहाज में बैठकर
अटलाटिक तक जाना चाहता था
इस तरह कि हवा उल्टी हो
बिलकुल खिलाफ
हवा भी नहीं बल्कि तूफान या अधड
जिसमें शहतीरें टूट जाती है
किवाड डैनों की तरह फडफडाने लगते हैं
दीवारें ढह जाती है और जंगल मैदान हो जाते हैं
मैं जाना चाहता था दर असल
अटलांटिक के भी पार उत्तरी ध्रुव तक
जहाँ सफेद भालू होते हैं
और रात सिक्कों जैसी चमकती है"[1]

प्रेमिका से मिलने का रास्ता तो सुगम नहीं दुर्गम है। फिर इन बाधाओं को मिटाकर उनके पास पहुँचने के लिए वह लड रहा है। स्नेह सान्निध्य से ही सामंती

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - एक शहर को छोडते हुए आठ कविताएँ - पृ. 24-25

व्यवस्था को तोडा जा सकता है। याने कि संभ्रात लोगों को पराजित करना प्रेम के लिए अवश्य है। कवि यों बोलते हैं-

"अच्छा हो अगर
हम शहर की सबसे ऊँची और खुली छत पर
खडे होकर पतंग उडाये
और हम ज़ोर-ज़ोर से हँसे
कि देख लो अभी भी हँस सकते हैं इस तरह
और गायें अपने पूरे गले से
कि जान लो हम भी गा सकते हैं
और नाचे पूरी ताकत भर
कि लो देखो
और पराजित हो जाओ"[1]

कवि यहाँ अपनी पूरी ताकत से दुनिया में लडने का आह्वान देते हैं। प्राचीन काल से लेकर आज तक प्रेम करना अपराध माना जाता है। इसी वजह से दोनों प्रेमी प्रेमिकाएँ उपहास के पात्र बनते हैं। समाज में असुरक्षा का बोध उत्पन्न होता है। इसलिए प्रेमी इस खराब दुनिया से पूछता है - "....लेकिन हम आखिर में ठहरेंगे कहाँ? उदय जी असुरक्षा के इस भय को यों प्रस्तुत करते हैं-

"एक दिन हम अपना सारा सामान बाँधेगे
और रेलगाडी में बैठकर चल पडेंगे, ताप्ती

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - एक शहर को छोडते हुए आठ कविताएँ - पृ. 27-28

x x x x

हम चाहेंगे ताप्ती कि
इस जगह को भूलते हुए हमें खूब हँसी आये
और अपनी बातचीत में
हँस्ते हुए हम इस जगह का अपमान करें
सोचे कि एक दिन ऐसा हो
कि सारी दुनिया में ऐसी जगहें कही न हो"[1]

यहाँ प्रेमि-प्रेमिकाओं का मानसिक तनाव या विवशता का ज़िक्र है। स्नेह की स्मृति मरते वक्त तक हर प्रेमि-प्रेमिका के दिल में है। क्योंकि वैयक्तिक तौर पर उस समय सुखद स्मृतियाँ हैं। सुखद स्मृतियाँ हम से दूर नहीं होती। उदय जी की राय में असफल प्रेम अधूरे घर की तरह हैं। इस अवसर पर उदय जी का विचार देखिए-

"सामने की
ऊँची ढीह पर, बबूल के नीचे
एक घर, आधा बनाकर छोड दिया गया जो
वर्षों पहले
इस विकट लडाई को
कोई क्या देखेंगे हमारी अपनी आँख से?
निकलेंगे एक दिन लेकिन
इस साबुत इस्पात की तरह पानीदर

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - एक शहर को छोडते हुए आठ कविताएँ - पृ. 29

तपकर इस कठिन आग में से
अगले किसी बडे
महासमर के लिए।"[1]

अर्थात प्रेम के सिवा ज़िन्दगी की पूर्ति नहीं होती। क्योंकि जीवन की अन्य चुनौतियों के विरुद्ध प्रतिरोध ज़ाहिर करने के लिए प्रेम हमें शक्ति देता है। याने कि प्रेम दुनिया का सबसे शक्तिशाली एवं क्रान्तिकारी भाव है।

5.6 पारिस्थितिकी

प्रकृति के साथ हमारा संबन्ध अटूट है। यह संबन्ध अनादि काल से हुआ था। इसलिए हमारे मन में प्रकृति के साथ एक विशेष प्रकार का लगाव है। दोनों के बीच एक पारस्परिकता एवं संतुलन पहले थे। इस अवसर सच्चिदानन्द सिंह का विचार समीचीन होगा - "प्राचीन प्रस्तर युग तक जब मनुष्य का जीवन प्रकृति के समीप था और प्राकृतिक स्थितियों द्वारा नियंत्रित होता था, मनुष्य और प्रकृति के बीच बहुत कुछ अन्य जीवों जैसी ही पारस्परिकता रही और संतुलन कायम रहा।"[2] अर्थात् हम प्राकृतिक शक्तियों द्वारा नियंत्रित थे। लेकिन आज हमारे अनुकूल प्रकृति को बनाने की रीति है। यह औद्योगीकरण का परिणाम है। इसके फलस्वरूप प्रकृति क्षत-विक्षत हो गयी। ऋतु चक्र बिगड गया। ज़हरीले पदार्थों से वायु प्रदूषित हुई। औद्योगीकरण और नगरीकरण की अन्धी दौड़ ने प्रकृति को इतना क्षत-विक्षत

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - एक शहर को छोडते हुए आठ कविताएँ - पृ. 32
2. सच्चिदानन्द सिन्हा - भूमंडलीकरण की चुनौतियाँ - पृ. 92

किया है कि उसका खामियाज हमें कई स्तरों पर भुगतना पड रहा है। मौसम चक्र गडबडाने से लेकर ओज़ोन की पर्त में छेद हो जाने के हादसे मालूम नहीं है और इनका दुष्परिणाम दूरगामी है। इसी से हमें पता चलता है कि प्रकृति की रक्षा सार्वजनिक एवं खुद दोनों स्तरों से शुरू करना है।

उदय प्रकाश प्रकृति के प्रबल पक्षधर हैं। उनकी रचनाओं में प्रकृति के साथ उनका आत्मीय संबन्ध दृष्टव्य है। 'भाई का सत्याग्रह' कहानी में प्रकृति के साथ का रिश्ता यों प्रकट है - "...अब भी उसका घर, उसके खेत, उसके नाते, रिश्तेदार बचपन के सगी साथी वही थे। वे सारे पेड तालाब और नदी-नाले भी, जिनसे उसकी गहरी दोस्ती थी।"[1] ध्यान देने की बात तो यह है कि यह बहुत पहले की बात थी। वह बीस साल पहले गाँव को छोडकर शहर आया था। फिर भी गाँव की ऊष्मलता उनके हृदय में अब भी शेष है। उदय जी का गांव 'छप्पन तोले का करधन' कहानी में है - "मध्य प्रदेश नदियों और पहाडी नालों से भरा हुआ राज्य है। आप किसी भी सड़क से दस किलोमीटर चलिए इतनी सी दूरी न ही सडक को काटनेवाले दो चार नाले या एकाध नदी आपको मिल जाएगी। विष्णुपुर से बनारस के बीच की सडक भी ऐसे असंख्य नाले और नदियों से भरी हुई सडक है।"[2] उदय जी की रचनाओं का कैनवास अपनी इस धरती की महक से विशाल हुआ है। समकालीन रचनाएँ धरती और प्रकृति की स्मृतियों से हममें सादगी, सहजता एवं शालीनता को जगा रही हैं।

---

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरे का स्कूटर - भाई का सत्याग्रह - पृ. 79
2. वही - पृ. 98

भारत सरकार द्वारा अपनायी गयी उदारवादी नीति, विदेशी निवेश के लिए कारण बन जाती है। इसलिए भारत में बहुराष्ट्रीय निगमों का प्रवेश हुआ। यहाँ की नदियाँ प्रदूषित होने लगीं। याने प्रकृति का नाश होने लगा। उदय जी की चर्चित कहानी 'वारेन हेस्टिंग्स का सांड' में हेस्टिंग्स भविष्य बतानेवाले लडके से पूछता है - "प्रश्न यहाँ होगा कि इंडिया में अनेक जैसे नेटिवों का राज होगा तो क्या ये नेटिव शासक इंडिया को लूटने और बेचने के साथ साथ इस हवा को भी बेटा डालेंगे और खत्म कर डालेंगे?"[1] अर्थात हेस्टिंग्स को आगमी शासकों के बारे में कोई भी शक नहीं था। उनकी शंका सच हो रही है। हमारी प्राकृतिक संपदा बेची जा रही है। प्राकृतिक संपदा में पहले की ऊष्मलता तो आज नहीं, वह ज़हरीली बन गयी है। भारत की प्रकृति के बारे में वॉरेन हेस्टिंग्स बताते हैं - "यह हवा यूरोप ही नहीं संसार की सारी हवाओं से बिलकुल अलग थी। उसका पूरा शरीर एक अनोखे स्फुरण से सिहर उठा। लगा जैसे इस हवा को अनगिनत नदियों और झरनों ने अपने निर्मल जल से थो डाला है। घने जंगलों के करोडों वृक्षों ने अपनी अरण्य पत्तियों से छान डाला है और लाखों तरह के फूलों ने उसमें अपनी गंध भर दी है।"[2] अर्थात हमारी प्रकृति ईश्व की वरदान है, वरदान होने के कारण यह पवित्र एवं संरक्षण की कोटि में आती है। इसका सदुपयोग करना है। प्रकृति की महक हमारे सामने पेश करके उनकी रक्षा का आह्वान करते हैं, उदय जी।

---

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरे का स्कूटर - वॉरेन हेस्टिंग्स का साँड - पृ. 116
2. वही - पृ. 116

भूमंडलीकरण के इस दौर में औद्योगिक विकास के परिणाम नदियों के अस्तित्व पर संकट पैदा हुआ। प्रकृति से एक एक करके संपत्ति गायब हो गयी है। उदय जी यों यह जाहिर करते हैं-

"कितनी नदियाँ अब
पंजाब में
कितने और कितने गुरुद्वारे हैं
पंजाब में
बताओ प्रार्थना करते लोगों के फेफडे में
कितना मिथाइल आइसो सायनेट है
बनाओ
पंजाब में
कितने भोपाल हैं
ये सारे प्रश्न
अब अनिवार्य हैं।"[1]

हम सब जानते हैं कि 'पंजाब' का अर्थ है पाँच नदियों का देश। लेकिन आज वहाँ गुरुद्वार, मिथाइल आइसो सायनेट की भरमार है। सब लोगों के फेफडों में मिथाइल आइसो सायनेट है, यह तो ज़हरीला पदार्थ है। इस पदार्थ से लोग कैनसर के शिकार बनते हैं। याने कि प्राणवायु ज़हरीला हो रही है, जिससे पशु पक्षियों की अनेक प्रजातियाँ पृथ्वि से विलुप्त होती हैं। सब कहीं पर्यावरण का प्रदूषण हो रहा है।

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - पंजाब : कुछ कविताएँ - पृ. 83

"आग चल रही थी
रोटियाँ सींक रही थीं
आलु भुन रहे थे
और पास में कुल्हाडे पडे थे।"[1]

यहाँ कवि पाठकों से बताना चाहते हैं कि सब कहीं एक अदृश्य 'कुल्हाडी' पडा है। अचानक ही 'कुल्हाडी' सब चीज़ों को नष्ट करेगा। चेतावनी की भाषा उदय की खासियत है। यह समकालीनता की विशेषता भी है।

उदय प्रकाश जैसे समकालीन रचनाकार अपनी रचनाओं के ज़रिए प्रकृति एवं मनुष्य के बीच का संबन्ध पुनः मिलाने में तथा इस आपसी संबन्ध टूटने से होनेवाले आघातों से मनुष्य को अवगत कराना चाहते हैं। 'और अंत में प्रार्थना' कहानी में आदिवासियों के ढीगर गाँव का चित्रण करते हुए वहाँ की प्राकृतिक संपत्ति का ज़िक्र वे करते हैं। उसी इलाके में औद्योगीकरण के फलस्वरूप यहाँ की प्रकृति का जो नुक्सान होगा उसका चित्रण देखिए - "...यहाँ के असली और बहुत पुराने बाशिदों के खेत-बारी कारखाने के विस्तार के लिए जाएँगे। पेपर मिल का वेस्ट प्रोडक्ट यानी रबड, कचडा और कास्टिक सोडा तथा अम्लों से भरा ज़हरीला छुआँ चारों ओर फैल जाएगा। धरती पर आकाश में तीतर-बटोर, सांभर-छिगरा, रीछ-खरगोश नहीं रहेंगे। वन्य प्राण समाप्त हो जाएँगे। सिर्फ कुछ गिने-चुने सियार बेचेंगे, जो ढीगर गाँव, शहर के पिछवाडे रहेंगे। लेकिन कागज़ का उत्पादन ज़ारी

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - पक्षी - पृ. 55

रखने के लिए और कारखाने को चालू रखने के लिए कच्चा माल चाहिए और पेडों का प्लांटेशन होगा। नर्सरियाँ खोली जाएगी, जहाँ विदेशी पेडों के नन्हें-नन्हें बच्चे लाखों की तादाद में पैदा किये जाएँगे। सफेद का जंगल तैयार होगा। कागज़ बनेगा। लोग भूल जाएँगे कि यहाँ पहले कौन कौन से वृक्ष होते थे। यूक्लिप्टस के जंगल ज़्यादा पानी खीचेंगे। ढींगर गाँव की धरती का जल सस्तर नीचे खिसकता जाएगा। कुओं में पानी नहीं होगा। और गहरी बेरिग होगी। फिर और गहरी। खेत अनुपजाऊ, ज़मीन, परती होती ज़मीन परती जाएगी। वनस्पति जगत और ऋतुओं के बीच अब तक चला आता पर्यावरण संतुलन बदल जाएगा। वर्षा नहीं होगी। गर्मी में यहाँ भी बिना कुलर-पंखे के रहना मुश्किल हो जाएगा। लोगों के फेफडे कास्टिक सोडा और दूसरे केमिकल्स के कणों से भरी हवा को खींचते-खींचते बीमार हो जाएँगे मिट्टी के क्षरण की रफ्तार बढ जाएगी। ...पशुओं में अनेक बीमारियों पर निर्भर सड़ता, धनुहार जैसी जनजातियाँ गायब हो जाएगी।"[1] याने कि उद्योग एवं विकास के परिणाम स्वरूप प्रकृति का संतुलन बिगड जाता है। इस कटुसत्य को उदय जी अपनी कविता में उभारते हैं।

"विशेषज्ञ जानते हैं वर्षों पहले मेरे बचपन के दिनों में
खालिक मेकल या विध्य की पहाडियों में
अंतिम बार देखी गयी थी वह चिडिया
जिस पेड पर बना सकती थी वह घोंसला
विशेषज्ञ जानते हैं वर्षों पहले अंतिम बार देखा गया था वह पेड

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - और अंत में प्रार्थना - पृ. 152-153

अब उसके चित्र मिलते हैं पुरा वानस्पतिक किताबों में
तने के फासिल्स संग्रहालय में
पिछली सदी के बढई मृत्यु के बाद बाद भी
याद करते हैं उसकी उम्दा इमारती लकडी।"[1]

अर्थात प्रकृति का हर एक कण नष्ट होकर बाद में वनस्पति की किताबों में सीमित होनी है। आनेवाली पीढी के लिए हम प्राकृतिक संपत्ति की जानकारी इन पुस्तकों से देंगे या फासिल के संग्रहालयों में भेजेंगे। यह स्थिति निकट भविष्य में संभव हो जाएगा। इस स्थिति तक पहुँचाने के पहले हमें अवगत कराना उदय जी का लक्ष्य है। हर वस्तु प्रकृति की है चाहे वह मशीनी वस्तु हो या अन्य। उदय जी की कहानी 'पॉल गोमरे का स्कूटर' में स्कूटर प्रकृति के विस्तार के रूप में माना जाता है। स्कूटर का एक-एक पुर्जा, अंग-प्रत्यंग जिस धातु का बना है, वह लौह अयस्क के रूप में धरती के गर्भ से निकाला गया होगा। उसमें प्रयुक्त रबड केरल के उडुप्पी जिले या असम के किसी इलाके के रबड के पेडों से दिन-रात रिस्तें रस से निर्मित हुआ होगा। जिस ईंधन से यह स्कूटर अपनी गति हासिल करेगा वह पेट्रोलियम और कुछ नहीं, हज़ारों साल तक पृथ्वी के गर्भ की अग्नि और नैसर्गिक ऊष्मा से रूपांतरित वनस्पतियों का ही तो तरल कार्बनिक प्रारूप है। अर्थात प्रकृति मनुष्य के हर एक स्पन्दन से जुडी हुई है। आज प्रकृति गायब हो रही है। प्रकृति में कोई भी चीज़ें उपयोग शून्य नहीं होती। हर चीज़ के लिए अपना अपना काम भी होता है। प्रकृति के हर कण पर भरोसा रखनेवाले उदय जी बताते हैं - "जब बादल

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - अर्ज़ी - पृ. 14

गरजते हैं, तो उनकी धमक से ये धरती अंदर से धडकने लगती है... बादलों के गरजने से धरती में जो दरारें बनती हैं, उन्हीं में से ये छतरियाँ बाहर आती है। ....इन बडी-बडी चट्टानों को बहुत नन्हें-नन्हें लिजलिजे कीडों ने बनाया हो। शंख के भीतर जो कीडा होता है, उसे तुम छू भी नहीं सकती। उंगली उसमें धंस जाएगी लेकिन वह कितना मज़बूत कवच बनाता है।"[1] आज जंगल की स्थितियाँ क्या हैं? जंगल में दूर से कई तरह के पक्षियाँ खाने की खोज में आते थे। आज वे दिखाई नहीं देते। आज जंगल से सूखे बीज और कुछ भी नहीं दिखाई देता। चिडियाँ अपनी धरती से पलायन करती हैं। पेड या जंगल न होने के कारण सारी प्राणियाँ मर रही हैं। हवा लू बन गयी है। जंगली संपत्ति नष्ट हो रही है। वहाँ पीने के लिए पानी तक नहीं है। सब कहीं धूप ही धूप है। उदय जी धूप में मरनेवाले एक सोन कीडा को हमारे सामने पेश करते हैं - "सोने का कीडा धूप पडते ही बेचैन हो गया और किसी अंधेरी शरण की खोज में पागलों सा भटकने लगा उसने अपने पंख छितराए, बस एक पल के लिए मई-जून की उस जलती हुई धूप में थोडे से चमकीले रंग पैदा हुए। फिर सब बुझ गया। कीडा धूप में झुलसकर नीचे गिर पडा था और काला पडता हुआ कर रहा था। उसका जादु खत्म हो गया।"[1] यहाँ सोन कीडा धूप में त्रस्त मानव जाति का प्रतीक है। प्रकृति का संतुलन बिगडने के कारण, पेडों की छाया कहीं नहीं दिखाई देती। आज धूप के कारण कई लोग दिन-ब-दिन मर रहे हैं। पानी की व्यवस्था भी कहीं नहीं है। प्रकृति भी मनुष्यों के ऊपर शोषण के प्रतिरोध कर रही है। उदय जी प्रकृति के हर एक पहलु पर सचेत हैं।

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - छतरियाँ - पृ. 57

प्रकृति मनुष्य के चिंतन के परे है। वह एक रहस्यमय खजाना ही है। पृथ्वि के अंदर क्या-क्या है? या क्या-क्या हो रहा है? मनुष्य अब भी इस पर रिसर्च कर रहा हैं। उपभोगी मनुष्य प्रकृति के स्पंदनों को नहीं जानता। लेकिन कीडे एवं पशु प्रकृति को ज़्यादा जानते हैं। उदय जी ने इसकी ओर भी इशारा करके यों कहते हैं - "ढूहों को दीमकें बनाती है और मिट्‌टी को न बनाने के लिए पानी पता नहीं कहाँ से लाती है। ज़मीन के भीतर से, हवा से या शायद अपने नन्हें-नन्हें शरीर से।"1 अर्थात छोटे-छोटे कीडों को प्रकृति के रहस्यों और उसके अंदर छिपे तमाम खजानों के बारे में ज़्यादा पता है। ढूह की भीतरी मिट्‌टी हर समय नम है। याने कि ये कीडे नर्मम मिट्‌टी की बुलबुले है। इस कीडे प्रकृति को या मिट्‌टी को उर्वर बनाते हैं। साथ ही धरती की ओर आक्सीजन (oxgen) की गति अनायास बनाती है। वहाँ किसान लोग अनेक खाद्यपदार्थों का उत्पादन करते हैं। इस दायरे में देखा जाये तो छोटे कीडे का काम छाटा नहीं है।

जंल की हर चीज़ को हम अपनी उपयोगिता एवं पैसा कमाने के लिए हटप लेते हैं। इसका ज़िक्र उदय जी ने किया है। जंगल में गाल, सागौन, पलाश और तेंदु तो बहुतेरे थे। पलाश को उनके इलाकों में छिउला कहा जाता है। इसके पत्ते से लाख और टेसुओं से रंग बनाता था। इसकी जडों को कूचकर मिट्‌टी के घरों में छुई (चाक) मिट्‌टी से पुताई के लिए कुंची बनायी जाती थी और तेंदु के पत्तों को सुखाकर उनमें तंबाकू भरकर बीडियों बनाई जाती थीं। नंबर सत्ताइस, शेर छाप,

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - छतरियाँ - पृ. 57

झंडा छाप और गढ़ा छाप बीडिया उस इलाके में बहुत बिकती थी। बी डी वाले करोडपति होते थे। और हवाई जहाज़ में चलते थे। अंग्रेज़ उन्हीं को यहाँ राज सौंप गए थे, यहाँ की संपत्ति को लूटकर पाश्चात्यों में भेजने और हमारी प्रकृति को बेचने के लिए। 'बेचने' के स्थान 'बचाना' होना अनिवार्य है। सब कुछ बेचे जा रहे हैं, इसलिए समकालीन रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के ज़रिए 'बचाना' का आह्वान दिया है। याने कि भूमंडलीकरण के इस दौर में सब को बचाना चाहिए-

"बचा लो मेरी नानी का पहियों वाला काठ का नीला घोडा
संभाल कर रखो अपने लट्टू
पतंगे छुपा दो किसी सुरक्षित जगह पर
देखा हिलता है पृथ्वी पर
अमरुद का अंतिम पेड
उडते हैं आकाश में पृथ्वी के अंतिम चिडिया
बचाना ही हो तो बचाये जाने चाहिए
गाँवों में खेत, जंगल में पेड, शहर में हवा
पेडों में घोंसले....."[1]

अर्थात् प्रकृति और हमारी संस्कृति को बचाना चाहिए। 'बचाना' हमारे मंत्र में अपनाकर, हर दिन इसके लिए प्रयत्न करना है। पेड, चिडिया, खेत, हवा एवं घोसले सब खतरे में हैं। इसलिए उदय प्रकाश गायकों से अनुरोध करते हैं कि इस प्रकार का गीत गाना ठीक है-

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - बचाना - पृ. 21

"....गाओ
कि होना चाहिए अंतरिक्ष में
और पर्यावरण में आक्सीजन।
सिर्फ ऑक्सीज़न..."[1]

अर्थात् ज़हरीलो पदार्थों से हमारी पृथ्वी को बचाकर, पृथ्वि को जीवन्त बनाना चाहिए। जीवन्त प्रकृति में अनेक पेडों के वायु में हिलने की इच्छा उदय प्रकाश अपनी रचनाओं के द्वारा यों व्यक्त करते हैं-

"असंख्य वृक्ष हिलेंगे
असंख्य पूर्णविरामों की तरह।"[2]

5.7 लोक संस्कृति

'लोक' का तात्पर्य सर्वसाधारण जनता से है। लेकिन 'लोक' के अर्थ में भू-भाग का महत्व नहीं है। भारतीय मानस लोक को फोक से अलग करता है। क्योंकि दीन हीन, दलित, शोषित, पीडित तथा जंगली जातियाँ सभी लोक समुदाय मिलकर लोक संज्ञा को प्राप्त होता है। संस्कृति समाज की अभिव्यक्ति है तो साहित्य उसका विस्तार देता है। पाश्चात्य संस्कृति की ओर अंधाधुंध दौड हमारे सांस्कृतिक आधारों को ध्वस्त करती है। समकालीन कवियों में विशेषकर उदय प्रकाश ने परिवेश के समझकर रचनाएँ लिखी हैं। उनकी रचनाओं का संसार आम

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - भीमसेन जोशी प्रसंग 1984 - पृ. 86
2. उदय प्रकाश - रात में हार्मोनियम - पूरा होनेवाले वाक्य - पृ. 104

आदमी का दैनंदिन संसार है। उन्होंने बँधी बँधाई पुरानी परिपाटी को तोडने एवं रूढ़ मान्यताओं पर प्रहार करने की कोशिश की। वे साहसी होकर कहते हैं-

"वक्त में जो भी कुछ कर गुज़रने से
घबराता है या जी चुराता है।
वह इतिहास की घुड दौड में पीछे छुट जाता है।"[1]

उदय प्रकाश ने अपसंस्कृति का विरोध करते हुए भाषा एवं संवेदना के स्तर में परिवर्तन किया है। उनकी भाषा के संदर्भ में केदारनाथ सिंह कहते हैं कि कवि, भाषा का निर्णय नहीं करता, इस्तेमाल करता है कि ठीक उसी तरह, जिस तरह वह अपने तौलियों का इस्तेमाल करता है। गाँव के धुमैले शब्द, अनधुए बिम्ब, लोक मिथक आदि उसके काम हो गए हैं। सडक पर खेतों में खदानों-कारखानों में काम करनेवाले कामगार कला और कविता के नायक बनने लगे हैं। कविता के माध्यम से स्वस्थ साहित्यिक एवं सांस्कृतिक शुरुआत की गई है।

भाई बहन के स्नेह की कविता में लोक जीवन के क्रिया व्यापार हम देख सकते हैं-

"पीपल होती तुम
पीपल दीदी
पिछवाडे का तो
तुम्हारी खूब घनी-हरी रहनियों में
हारिल हम

---

1. उदय प्रकाश - रात में होम - पृ. 42

बसेरा लेते
हारिल होते हैं हमारी तरह ही
घोसले नहीं बनाते कहीं
बसते नहीं कभी
दूर पहाड़ों से आते हैं
x x x
पीपल की छाँह
तुम्हारी तरह ही"[1]

यहाँ बचपन जुडी हुई पीपल की छाँह, हरियाले का घोसला, अपार का तेल, कपास की बाती, ढिबरी धुँआ, छप्पर, नदी, मछली, सीपी आदि का चित्रण है। स्मृतियों में विलीन होकर वे लगातार नष्ट होती हुई संस्कृति के प्रति, चिन्तित दिखाई देते हैं।

उदय जी की कवितायें अपने आत्मीय सम्बन्धी जनों का ज़िक्र करती हैं। साथ ही साथ उनसे जुडी हुई सांस्कृतिक वस्तुओं का उल्लेख भी अपनी 'बचाओ' नामक कविता में है।

"बचा लो मेरी नानी का पहेलियों
वाला काठ का निला घोडा
सम्भाल कर रखो अपने लट्टू
पतंगों दुपा दो किसी सुरगदित जगह पर

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - नींव की ईंट हो तुम दीदी - पृ. 13

देखो हिलता है पृथ्वी पर
अमरुद का अंतिम पेड
उडते है आकाश में पृथ्वी के अंतिम तोते
बताये सारे विद्वान
मैं कहाँ पर टांग दूँ अपने दादा की मिरजई
किस संग्रहालय को भेजूँ पिता का बसूला
माँ का करधन और बहन के विछए मैं।"[1]

उदय जी कविता 'वैरागी आया है गाँव' में भी संस्कृति के कई पक्ष को यों अनावृत करते हैं-

"बंधु एक साथ तबेला भात लाओ
पुराने सिरीकमल चावल का
अरहर की दाल
थाडी कुटक्कुडिया घी और
आचार आम का तो हम धन्य हो।"[2]

सिरीकमल चावल, अरहर की दाल, कुटक्कुडिया धी एवं आचार ये सब हमारी अपनी संस्कृति का हिस्सा है। धरती से जुडकर, धरती से खाकर जीना आज हम चाहते हैं। उदय जी इच्छा यह है कि हम प्रकृति के अनुकूल बनें।

'और अंत में प्रार्थना' कहानी में आदिवासी जीवन से जुडी संस्कृति का चित्रण है। अरेबा-परेबा कहानी में सांस्कृतिक चिंता हम देख सकते हैं। देखिए-

---

1. उदय प्रकाश - रात में हार्मोनियम - बचाओ - पृ. 21
2. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - वैरागी आया है गाँव - पृ. 95

"एहंकी से गहन है अरेबा-परेबा
मारीन है मोहिनियाँ गान रे।"[1]

यह तो लोकगीत है। लोकगीत न नवीन होते हैं न प्राचीन। ये तो जंगल में स्वयं अंकुरित होनेवाले वृक्ष के समान है, इसकी जडें अतीत में हैं। ये गीत उनकी माँ गाया करती थी। उदय जी ने बीच-बीच में अपने गाँव के जंगली फलों और फसले का ज़िक्र किया है-

"सिंहाल पहाडी के ऊपर, जंगल के पार बसा हुआ एक छोटा सा गाँव था। हमारे इस गाँव की मिट्टी बलूहन थी, जिससे यहाँ धान, कोदो, कुटकी, तिल जैसी फसले होती थी। जबकि सिंहाला में काली चिकनी मिट्टी वाले खेत थे, जहाँ सब कुछ पैदा होता था। गेहूँ, चना, असली और धनिया थी।"[2]

सारांश यह है कि गाँव में बिताए अपने बचपन के दिनों में उन्होंने जो संस्कार अर्जित किया, उसी संस्कार को बाद में अपनी रचनाओं में एकत्रित किया। इसलिए उनकी रचनाओं में पीडित वर्ग के प्रति ममता, लोकगीत और लोककथाओं को शैली रूप देना आदि हम देख सकते हैं। लोक जीवन का साक्षात्कार कोई आसान कार्य नहीं लेकिन उदय प्रकाश कथ्य एवं शिल्प के ज़रिए अपनी रचनाओं में लोकजीवन के कई पहलुओं को अनावृत करते हुए समकालीन उपभोग संस्कृति की प्रतिसंस्कृति तैयार कर रहे हैं।

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - पृ. 98
2. वही - पृ. 98

5.8 गाँधी चिंतन

गाँधी हमारे युग के कर्मयोगी पुरुष हैं। गाँधी जी ने अपने जीवन काल में स्पष्ट किया है कि गाँधीवाद नाम की कोई वस्तु है ही नहीं और मैं अपने पीछे कोई संप्रदाय नहीं छोड जाना चाहता हूँ। मैंने तो केवल जो शाश्वत सत्य है, उसको अपने नित्य के जीवन और प्रश्नों पर अपने ढंग से उतारने का प्रयास किया है। इस अवसर पर डॉ. वनजा के वक्तव्य समीचीन होगा - "गाँधी जी ने सही ही कहा कि जिस शाश्वत सत्य को उन्होंने अपने जीवन में उतारना चाहा उसे ही हम गाँधीवाद कहते हैं।"[1] याने कि गाँधीवाद को संपूर्ण जीवन दर्शन के रूप में अपनाना चाहिए। गाँधी चिंतन को बइबिल, कुरान या गीता की तरह अपनाना चाहिए। उदय प्रकाश के शब्दों में - "बाइबिल, कुरान या गीता की तरह गाँधीवाणी हमारी श्रद्धा की वस्तु तो है।"[2] आज गाँधीचिंतन एक विकल्प बन गया है।

गाँधी-चिंतन इस नवउपनिवेश के खिलाफ लडने का सशक्त हथियार है। या गाँधीजी के विचार समकालीनता का दस्तावेज है। बहुलता, सहजता, स्थानीयता, स्वातंत्र्य, मानवीयता, अहिंसा आदि महान मूल्यों एवं आदर्शों से आज की उपभोग संस्कृति को पराजित करता है। इसके लिए गाँधीजी को उदय प्रकाश एक विकल्प रूप में स्वीकार करते हैं। उनकी कहानियों एवं कविताओं में यह भरा पडा है। 'पॉल गोमरा का स्कूटर' में स्कूटर गाँधी जी के चर्खा का प्रतीक है। उस उपनिवेशमें स्वदेशी आन्दोलन के लिए स्वदेशी वस्त्र का उपयोग मुख्य एजेंडा था। इसलिए

---

1. अंतिम जन - जनवरी 2013, अंक-1 - पृ. 31
2. उदय प्रकाश - नयी सदी का पंचतंत्र - पृ. 280

आज नवउपनिवेशवादी बाजारु संस्कृति के खिलाफ लडने के लिए प्रतीकात्मक रूप में गाँधीजी के चर्खा के स्थान पर स्कूटर प्रयुक्त है। गाँधीजी के स्वदेशी आन्दोलन और उपनिवेशी विरोधी सारे विचारों और औज़ारों को पॉलगोमरा याने रामगोपाल अपने चिंतन एवं कर्म में प्रयुक्त करता है। गाँधी चिंतन का सही उपयोग रचनाकार ने इस कहानी में किया है। इसलिए यह कहानी नवउपनिवेश का प्रतिरोधी स्वर बनकर हमसे बात करती है।

आज की सच्चाई यह है कि जिसके पास ताकत नहीं है वह अपनी अस्मिता तक नहीं बचा सकता। इनसान की बहुत सारी आकांक्षाएँ होती हैं। लेकिन जब उसके साथ घोर अन्याय होता है तो वह न्याय चाहता है। इसप्रकार न्याय चाहनेवाले एक युवक की कहानी है 'मोहनदास'। मोहनदास निम्न जाति के गरीब होते हुए भी उच्च शिक्षा प्राप्त की ऊँची श्रेणी में। कठिन परिश्रम के बाद उसे नौकरी तो मिली है लेकिन नियुक्ति नहीं हुई। बाद में उसे पता कि उसकी जगह उसके नाम, पते पर बिसनाथ काम कर रहा है। मोहनदास ने अपने को असली सिद्ध करने का कठिन प्रयत्न किया। लेकिन उसको कठोर शारीरिक एवं मानसिक कठिनाइयों का सामना करना पडा। 'मोहनदास' नाम उदय जी ने जान बूझकर दिया, उसके घर के हर सदस्य नाम काबा, पुतली, देवदास सब गाँधी परिवार के नाम हैं। यह तो यथार्थ को व्यक्त करने का डिवइज है। इसके पीछे का लाजिक क्या है? उसके बारे में उदय जी बताते हैं - "गाँधी अंतिम आदमी की बात करते थे।"[1]

---

1. शीतलवाणी - आगस्त-अक्तूबर 2012 - पृ. 72

यहाँ अंतिम आदमी मोहनदास है। गाँधी जी ने कहा है कि जो कदम आप उठाते हैं वह अंतिम आदमी के आँसू को पोंछता है। यह कहानी सत्य घटना पर आधारित हैं। कहानी के बाहर के मोहनदास को अभी तक न्याय नहीं मिल पाया है। इसका कारण यह है कि समाजवाद और पूँजीवाद में लोकतंत्र असफल हो चुका है। न्याय के लिए मोहनदास लड रहा है, लेकिन हथियार नहीं उठाता। क्योंकि गाँधीजी ने सिखाया था कि हथियार बल से दया बल ज़्यादा ताकतवर होता है। मोहनदास के ऊपर होनेवाला अत्याचार एवं नैतिक पतन की प्रक्रिया में हमें गाँधीजी की तरफ देखना होगा। क्योंकि लोकतंत्र, मानवतावाद और कल्याणकारी राज्य का भविष्य गाँधी एवं गाँधीवाद में सुरक्षित है। दुनिया का भविष्य गाँधीवाद में सुरक्षित है।

पाश्चात्य देश में गाँधीजी का बहुत आदर होता है। लेकिन भारत में? यह सोचने का विषय है। अमेरिका में एटनबरो की 'गाँधी' फिल्म दिखाई जा रही थी, वहाँ 'गाँधी' लोगों के लिए आधुनिक आविष्कार की तरह थे। अमेरिकी नौसना की एक कर्मचारी 28 वर्षीय लेसली कोल तो गाँधी से इतना अभिभूत हुआ कि उसने नौसेना की नौकरी छोड दी। नतीजे में उसका कोर्ट मार्शल हुआ और 235 डॉलर जुर्माने में भरने पडे। उन दिनों अमेरिका के स्कूली बच्चे और युवालोग विश्वयुद्ध के खतरों और पूँजीवादी तकनीकी सभ्यता की कोख से जन्मी 'मनुष्यहीनता' के सामने गाँधी को एक नए विकल्प के रूप में देख रहे थे। उन्हीं दिनों एक भारतीय पत्रकार को सडक पर एक मजबूत कद - काठी के नीग्रो ने रोक लिया और पूछा

---

1. अंतिम जन - जनवरी 2013 - अंक-1, पृ. 31
2. उदय प्रकाश - नयी सदी का पंचतंत्र - पृ. 280

- "ऐ तुम क्या भारतीय हो, तुम गाँधी को जानते हो? घबराकर भारतीय ने पूछा कौन सा गाँधी? अमेरिकी ने निराशा के सिर हिलाया, 'ओह'! तो तुम बूढे गाँधी जी को नहीं जानते?"[1] यह प्रश्न यदि हम खुद से ही पूछे कि क्या हम अपने गाँधी को सचमुच जानते हैं?

गाँधी जी
कहते थे-
'अहिंसा'
और डंडा लेकर
पैदल घूमते थे।"[2]

अहिंसा हमारे सबसे बडी अस्त्र है। यह भारतीयों का मंत्र है। नानी-पालखीवाला के मुताबिक - "मानव के पास जो सबसे बडी शक्ति है, वह है - अहिंसा। वह शक्तिशाली से शक्तिशाली अस्त्र है, जिसे आदमी ने अपनी पटुता के बल पर, सर्वाधिक संहारक हथियार से अधिक प्रभावशाली साधन बना दिया है।"[3] गाँधीजी अहिंसा को विज्ञान के रूप में मानते थे। क्योंकि विज्ञान में असफलता की चिंता नहीं है, उसी प्रकार अहिंसा एक राम-बाण है। जो किसी भी समय में असफल नहीं होता। क्योंकि वह आन्तरिक शुद्धि एवं सत्य का मेरुदंड ही है। सरोज कुमार शुक्ल के मुताबिक "अहिंसा का मुख्य अर्थ यह है कि हम विरोधी रुख को

---

1. उदय प्रकाश - नयी सदी का पंचतंत्र - पृ. 283
2. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - गाँधी - पृ. 78
3. डॉ. लक्ष्मी लाल सिधवी (सं) - नानी पालीवाल - आज का भारत - पृ. 156

नरम बनाएँ और उसे द्रवित कर दें तथा उसकी हृदय-वेदनाओं को इस प्रकार झंकृत कर दें कि वह स्वयं 'अहिंसा' का सबसे बडा समर्थक हो जाए।"[1]

समकालीन साहित्य गाँधीजी एवं गाँव को अनिवार्य शर्त के रूप में मानता है। क्योंकि ये दोनों हम से दूर हो रहे हैं। गाँधीजी ने भारत की आत्मा गाँव में देखा। गाँधीजी ने कहा है कि हमें अपने गाँवों में रहनेवाले मेहनती किसानों से तपते सूरज के तले, झुके कन्धे के साथ, अनाज पैदा करते हैं, अपनापन कायम करना होगा। वे भी अपनी ओर से अपनी तरफ से दोस्ती का हाथ बढाएँगे। उदय प्रकाश अपनी 'दिन' नामक कविता में किसानों के प्रति हमदर्दी जताते हैं। काम करके थके मारा किसान को देखकर उदय जी कहते हैं-

"एक सुरत वैल
हॉफ रहा है।
उसके पृट्ठों पर
चमक रहा है पसीना
थके हुए नथुनों से
गिर रहा है
सफेद झाग
सफेद ढग
धीरे-धीरे
सारे मैदान में
जमा हो गया है।"[2]

---

1. अंतिम जन - अंक-1, जनवरी 2013 - पृ. 30
2. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - दिन - पृ. 94

बैल यहाँ किसान का प्रतीक है। थके हुए किसान का पसीना सारे खेत में जमा हो गया। यह पसीने से सींचनेवाले अनाज को हम किसी संकोच के बिना खाते हैं। लेकिन उनके प्रति सरकार एवं जनता को घृणा है। उनको प्यार एवं सांत्वना देना चाहिए। गाँधीजी की दृष्टि में प्रेम की परिधि का विस्तार तब तक करते रहना चाहिए जब तक उसमें पूरा गाँव समाहित न हो जाए। याने कि भारत गाँवों में बसता है।

'और अंत में प्रार्थना' कहानी के मुख्य पात्र डॉ. वाकण्कर के चरित्र में गाँधीजी का प्रभाव हम देख सकते हैं। गाँधीजी कहते हैं, ...सर्वप्रथम हमें उनके बीच जाकर उसके साथ रहना होगा और दुःखों में शरीक होना होगा। ...रहन-सहन के स्तर में सुधार करना होगा। हमें उनके लिए साफ पानी की व्यवस्था भी करनी होगी। ...तब भी हम देश की जनता के सच्चे प्रतिनिधि बन सकेंगे।"[1] गाँधीजी से प्रभावित होने से उदय प्रकाश की रचनाओं में मुख्य पात्र के आचार-विचार, एवं व्यवहार में गाँधी के आदर्श एवं चिंतन प्रकट है। डॉ. वाकण्कर तबादला होकर ढींगर आदिवासी गाँव में आया। स्थानीय लोगों का कहना था कि कस्बे के सरकारी आस्पताल में डॉ. वाकण्डकर के आने के पहले कोई आदिवासी नहीं आया था। वे लोग वहाँ जाने से डरते थे। उनके बीच आम मान्यता यह थी कि 'जब पुलिस चौकी का दरोगा खाकी वर्दी उतारकर कोट-पैट पहन लेता है तो यह डॉक्टर बन जाता है और आदमी अगर आस्पताल में जाता है तो वह उसका अंडा और कलेजा चुरा लेता है।"[2] ढींगर गाँव में हैजा फैल गया। डॉ. वाकणकर हैजा प्रभावित गाँवों में

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - दिन - पृ. 94
2. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - और अंत में प्रार्थना - पृ. 214

पहुँचा। पाँच-छह गाँवों के बीच पानी के लिए जो एक तालाब था, उसका पानी प्रदूषित हो गया था। तत्काल कोई शोकथाम या व्यवस्था नहीं की गई तो महामारी और ज़्यादा फैल सकती थी। उन्होंने आदिवासियों से बात चीत की। तब पता चला कि उन्नीस सौ बयालीस के बाद इस इलाके में पहली बार हैज़ा फैला है। उस बार अंग्रेज़ सरकार थी यहाँ के कलेक्टर श्री फिलिप्स ने महामारी रोकने के लिए व्यवस्थित प्रशासनिक कदम उठाए थे और अधिक लोग नहीं मरने पाए थे। लेकिन वे पाठकों के सामने ढीगर गाँव की स्थिति पेश करके हमारी व्यवस्था पर व्यंग्य करते हैं। वाकण्कर बताते हैं - "बताओ, तुम्ही बताओ, क्या मैं छोटे छोटे निर्दोष आदिवासी बच्चों और औरतों को यों ही कंटेमिनिटेड पानी पीकर मरने देता?"[1] डॉ. वाकण्कर ने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में उपलब्ध एकमात्र, कीटाणुनाशक पोटेशियम परमैगनेट का पैकेट उठाया, और गोपीनाथ यादव के साथ प्रदूषित तालाब की ओर चल पडे। तालाब तो अन्यता बदबू से भराहुआ था। डॉ. वाकण्कर ने चुप होकर तालाब के कोने में कीटाणुनाशक के पैकेट को पानी में मिला दिया। गाँधीजी ने साफ पानी की व्यवस्था पर ज़ोर दिया है। क्योंकि इस प्रकार करना हर एक भारतीयों का धर्म है। डॉ. वाकण्कर अंत तक कठिनाइयों को झेलनेवाले आदिवासी एवं सांप्रदायिक दंगे के उपरान्त मर गये मुसलमानी युवक के लिए लड रहे थे। अर्थात् व्यवस्था के विरुद्ध लडे रहे थे। वास्तव में डॉ. वाकण्कर ने गाँधीजी के समान स्वार्थ को छोडकर आत्मबल के ज़रिये समाज की समस्याओं को हल करने के लिए प्रयत्न किया। आखिर गाँधीजी के समान अपने समाज से वाकण्कर भी तिरस्कृत हुए।

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - और अंत में प्रार्थना - पृ. 229

भारतीय नवउपनिवेशवादी संस्कार का गुलाम बन रहे हैं। 'पीली छतरीवाली लडकी' कहानी की वर्तमान भारत का सच्ची तस्वीर है। यहाँ युवा पीढ़ी पर चिंता जतानेवाले उदय प्रकाश इस ओर इशारा करते हैं कि आज की युवा पीढी अपनी बुरी हरकतों की वजह से पथभ्रष्ट हो चुकी है। पेप्सी पीकर, मोबाइल पर बातें करते एक हाथ से एक लड़की को थामते, सलमान खान या शाहरुख खान को अपने आदर्श समझकर जीनेवाले युवालोग। सांप्रदायिक दंगे एवं हिंसात्मकवृत्ति आदि से देश खंडित हो रहा है। आर्थिक व्यवस्था किसान एवं मज़दूरों को हताश बना रही है। उसके फलस्वरूप प्रकृति गायब हो रही है। आदमी भोगी बन गया है। पश्चिमी सभ्यता, भारतीय जनता को निगल रही है। इस नवउपनिवेशवादी माहौल से गाँधी के बगैर कौन हमें पचाएगा? उदय प्रकाश प्रश्न करते हैं - "वह आज़ादी किसके लिए थी, जो साबरमती के एक बूढ़े संत ने अपने करिश्मे से बिना तलवार और ढाल के 'वैष्णव जनतो तेने कहिए जे पीर पराई जाणे रे' गाते हुए पचास से कुछ साल पहले पैदा की थी? क्या उस संत को इसलिए पिस्तैल से उडा दिया गया था, जिससे वह भविष्य में कभी कोई करिश्मा पैदा न कर पाए?"[1] उदय जी संकोच के बिना बताते हैं कि गाँधी जी का पुनः अवतार होगा। अर्थात् गाँधीवादी विचारों से ही हमारे देश का सुधार संभव है। "क्या पश्चिम की कंपनियों के राज के खिलाफ इस बार गदर लिए होगा? क्या इस बार इस 'इंडिया' कंपनी सरकार की फौज उस स्वाधीनता संग्राम को 1857 की तरह फिर कुचल डालेगी और फिर उसके बाद क्या कोई अधनंग, लंगोटी लगानेवाले, वंचितों और दरिद्रों का एक नया

---

1. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 66

प्रतीक फिर कहीं सटोरियों, दलालों, अपराधियों और ठंगो के इस भ्रष्ट बाह्मन-बनिया बाज़ार-व्यवस्था को निहत्थे चुनौती देगा? इस मार्केट एंपायर में जो सूरज एक बार फिर नहीं डूबता दिखाई देता, वह बंगाल की खाडी या हिन्दी डूबा दिया जाएगा?"[1] अर्थात गाँधीजी की पल-पल में ज़रूरत होती है। वे हमारे आज के नायक एवं भविष्य के नायक होंगे। इस अवसर पर इरफान हबीब के शब्दों में शब्द मिलाकर कर सकते हैं कि "....अगली सदी गाँधी की होगी। वे भविष्य के हमारे नायक हैं।"[2]

स्त्री, दलित एवं आदिवासी जीवन के यथार्थों का खुलासा करने के साथ खलासी, द्वारपालक, डाकिया एवं बालक आदि के जीवन यथार्थों को भी उदय प्रकाश ने अपनी रचनाओं में स्थान दिया।

5.9 मज़दूर

'रेलगाडी' की यात्रा उदय प्रकाश को पसंद है। उनकी रचनाओं में रेलगाडी का चित्रण हम देख सकते हैं। 'अनुकपूर जक्शन' उनकी श्रेष्ठ कविता है। कविता में खलासियों की ज़िन्दगी को बाहर लाने का प्रयास है। खलासियों के महत्व को उद्घाटित करना और उसे एक उच्च मानव का दर्जा देने की ज़रूरत की ओर हमारा ध्यान कवि आकृष्ट करते हैं। उनके जीवन एवं कर्तव्य की महिमा पर कवि निम्नलिखित पंक्तियों में प्रकाश डालते हैं।

---

1. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 67-68
2. विजय बहादुर सिंह - उपन्यास समय और संवदना - पृ. 197

"खलासी सारी रात जाँच-पडताल करेंगे
कि पटवारियों सही जगह पर तो हैं
कि नट-बेल्ट कसे हुए तो है
कि किसी हत्यारे ने अंधेरे में
चारों की तरह छुपकर
पिरा प्लेटों तो नहीं निकाल दी है
कि टेलिफोन के तार कटे हुए तो नहीं है
x x x
खलासी छड पीटते रहेंगे
खाँसते रहेंगे रात भर
उनकी नीली कमीज़ें
अंधेरे में गश्त लगती रहेंगी
x x x
कोई नहीं सोचता
खलासियों के बारे में
लेकिन खलासी सोचते हैं
सबके बारे में।"[1]

रेलवे व्यवस्था के अंतिम पद के व्यक्ति खलासी है। लेकिन उनकी भूमिका तो बडी है। रेलवे के संचालन कार्य में अग्रणी है। वे अन्य लोगों के लिए परिचित तो नहीं। लेकिन उनके कर्तव्यनिष्ठा के बारे में उदय जी हमें सोचने के लिए मजबूर करते हैं।

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - अनुकपूर जंक्शन - पृ. 22-23

आम लोगों के लिए 'डाकिया' एक परिचित व्यक्ति है। वह तो काम तनख्वाह में काम करनेवाला है। वह दूसरों के 'मनीआर्डर' गिन देता है, लेकिन उनकी आर्थिक स्थिति बहुत शोचनीय है। उनके बारे में उदय जी यों बताते हैं-

"डाकिया
हाँफता हुआ धूल झाडना है।
चाय के लिए मना करता है
डाकिया अपनी चप्पल
फिर अंगूठे में संभालकर फँसाता है
और, मनीआर्डर के रुपये
गिनता है।"[1]

अर्थात डाकिया अपने कर्तव्य के पालन में बहुत खुश है। अधिक दूर तक बार-बार चलने के कारण उनके चप्पल शीर्ण दशा हैं। फिर भी उसे संभालकर रखते हुए आगे की ओर वह जा रहा है।

'द्वारपाल' कविता में कवि ने पहरेदार व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पहलुओं को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। सम्पन्न वर्ग ने हाड-माँस के जीवित द्वारपाल को सीमेंट का मृत द्वारपाल बनाया। उसी वक्त में भी वह उनकी सुरक्षा करता है। ये द्वारपालक निम्न जाति के लोग हैं, इसलिए उदय प्रकाश उन से पूछते हैं-

"तुम यहाँ कहाँ बैठे हो द्वारपालक?
यह तो निर्जन मैदान है और

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - डाकिया - पृ. 20

चौखट दरवाजा नहीं है कहीं भी
तुम्हें सीमेंट से नहीं बनाया गया है द्वारपाल
तुम जागे हुए या सोये हुए हो द्वारपाल
भूख तुम्हें लगी होगी द्वारपाल
वे जो असुरक्षिता हुआ करते थे गरीब से
वर्षों पहले रात में
यह जगह छोड़कर
कहीं और चले गये हैं द्वारपाल
तुम अब
बिलकुल सुरक्षित हो द्वारपाल।"[1]

उनकी भूख, सोने-जागने के बारे में कोई सोचता नहीं।

5.10 बालविमर्श

आज की संस्कृति में अनेक चीज़ें नष्ट हो रही हैं। उसमें एक है बच्चों का बचपन। पुराने ज़माने में बच्चे प्रकृति की गोद में खोलते थे, सोते थे और खाते थे। आज के बालक इससे दूर हैं। वे रियालिटी शॉ की प्रथम श्रेणी में आने के लिए प्राक्टिस कर रहे हैं। उनके बारे में उदय जी यों कहते हैं-

"अपनी पवित्र साँसों की भाप और किलकारियों से
जो कैडबरीज नहीं खाते जिनके नसीब में है
ढून और ऋषि बेली पब्लिक स्कूल

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - द्वारपाल - पृ. 90

जो अब नहीं सकते इंडियन आइडल या वॉयस आफ इंडिया
वे बच्चियों जिनकी नियति में एक दिन कोई सोनागछी।"[1]

आज बचपन की स्मृतियाँ नष्ट हो रही हैं। वॉयस आफ इंडिया (Voice of India) और इंडियन (Indian Ideal) में बच्चे के बचपन फेंके जाते हैं।

बाल मज़दूरी आज अपराध है। लेकिन अनेक होटलों और अन्य जगहों में वे काम करते हैं। भोजन एवं सोने के लिए कोई जगह न मिलने के कारण वे सौ वर्ष बुजुर्ग जैसे दिखाई देते हैं। उदय जी की चिंता देखिए-

"लाखों करोडों बच्चे प्लेटे धोते थे, भुट्टे, ब्रड
प्लास्टिक के सामान
अंडे-अख्बार
और अटर-शटर चीज़ें बेचते मकोडों की तरह रेंगते थे
शहर भर में
और सौ साल से ज़्यादा लगती थी उनकी उम्र।"[2]

अपसंस्कृति में गरीबी एवं भूखमरी बढती जा रही है। हर पल बच्चे मौत तक पहुँच जाते हैं। अपनी चर्चित कहानी 'मैंगोसिल' में सूरी के माध्यम से अविकसित देशों के बच्चों में दिखाई पडनेवाली भूखमारी एवं गरीबी का चित्रण यहाँ विचारणीय है। वे आदमी आज चाहे महानगरों या नगरों के हैं अथवा गाँव के

---

1. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ करती है - एक लिखी जा रही कविता का पहला ड्राफ्ट - पृ. 15
2. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ करती है - सफल चुप्पी - पृ. 26

किसान हैं। कहानी में चन्द्रकान्त के बेटे सूरी की बीमारी मैंगोसिल है। जिसमें बच्चे का सिर साइज में बढता ही जाता है। कहानीकार मैंगोसिल रोग को विकास के असंन्तुलन का विराट रूप मानते हैं। कहानी के ज़रिए उदय जी यह दिखाना चाहते हैं कि तीसरी दुनिया के गरीब देशों के करोडों बच्चे हर रोज़ कुपोषण गरीबी एवं गंदगी के कारण असंख्य जानलेवा बीमारियों का शिकार हो जाते हैं और मर जाते हैं। डॉक्टरों के मुताबिक इस रोग के कारणों और वायरस का पता अभी नहीं लगाया जा सका है। लेकिन बच्चों की उम्र दो से ढाई साल तक होती है। इथोपिया, घाना, भारत, बंगलादेश, इराक, अफ्गानिस्तान, बोस्निया, फिलीस्तीन, कोसावो, श्रीलंका, नमीबिया, ब्रज़ील जैसे 67 अविकसित देशों में ऐसे बच्चे लगातार जन्म ले रहे हैं, जिनका सिर तेजी से बडा हो रहा है। वास्तव में इन बच्चों का अईडेंटिटी यह है कि वे गरीब घरों में गंदगी एवं कुपोषण के बीच पैदा हुए हैं। उन्हें नींद लगभग नहीं आती। वे हर पल मौत के शिकार बनते हैं। उन्हें देखकर उदय जी यों कहते हैं-

> "कविता का एक वाक्य लिखने में दो मिनट लगते हैं
> इतनी देर में चालीस हजार बच्चे मर चुके होते हैं
> भूख और रोग से।"[1]

अर्थात आज विश्व की कई जगहों में एक मिनिट में अनेक बच्चे मर जाते हैं। गरीबी एवं रोग को इस पृथ्वी से मिटाना अनिवार्य है। क्योंकि स्वास्थ्य रहित

---

1. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ करती है - एक जल्दबाज़ बुरी कविता में आँकडे - पृ. 28

एवं महामारि से त्रस्त एक नयी पीढ़ी की जरूरत नहीं। उनके बदले प्रतिरोध एवं क्रान्तिकारी बच्चों की ज़रूरत होती है।

5.11 वृद्धों का यथार्थ

वृद्ध एक स्मृति संस्कृति एवं अनुभव है। प्रभाकर श्रोत्रिय ने ठीक ही कहा है कि वृद्ध एक स्मृति, एक संस्कृति और अनुभव है। इतिहास ने उसकी देह पर पाँव रखकर अपना सत्ता तय किया है। लेकिन आज वृद्धों को मंदिर के चबूतरे पर और घर के किसी अकेले कमरे में अपना अधिकांश समय बिताया पडता है। वृद्धों में विशेषकर स्त्रियाँ घर के एक कोने में ही मृत्यु की प्रतीक्षा करनी पडती है। क्योंकि परिवार में उन्हें बोझ या बेकार बस्तु समझकर प्रायः उनकी अवहेलना की जाती है। वृद्धावस्था में साहचर्य स्नेह एवं आदर की आवश्यकताएँ है। लेकिन आज घर के शत्रु बन गये हैं वृद्धलोग। उदय जी ने इस यथार्थ को 'छप्पन तोले का करधन' कहानी के द्वारा किया है। यह तो संतानों एवं निकट संबन्धियों से बहिष्कृत एक दादी की कहानी है। दादी अपने घर के निकड की गंद एवं अंधियारी कोठरी में नरकीय पीडा अनुभव कर रही है। घरवालों ने दादी की उपेक्षा की थी, दादी को शत्रु समझती है। इसका खुलासा यों करता है - "....सब दादी को अकसर भूल जाते थे और कभी-कभी तो महीनों उन्हें नहीं देखते थे। न वे हमारी आँखों के सामने कहीं होती, न हमारी स्मृति में उनका कोई अस्तित्व रहता।"[1] यह विस्मृति

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - छप्पन तोले का करधन - पृ. 62

आज के घरों में ज़्यादा है। कहानी में घरवालों की धारणा थी कि दादी के पास छप्पन तोले का करधन है, वह बुढिया ने तो छिपाकर रखा है। करधन मिलने के कारण दादी पर अत्याचार घरवाले करते ही रहते हैं। चाची बूढी पर अत्याचार सबसे ज़्यादा करती है। चाची दिल की जगह पर लकडी का चोकार टुकडा लगानेवाली स्त्री है। एक स्त्री का शत्रु दूसरा कोई नहीं एक स्त्री ही है। इस वास्तविकता के तहत उदय जी कहते हैं - "....चाची ने दादी को बीमारी में बी बहुत डराया-धमकाया। छुरा चमकाती रही, दादी का गला दबाया और नाक और मुँह बंद करके उनकी साँसा भी देर तक रोकी। साँस रुकने से दादी का शरीर गुब्बार की तरह फूल गया। महीनों तक अन्न का एक दाना भी नहीं दिया गया।"[1] इस प्रवृत्ति से हमें मालूम हो जाता है कि आर्थिक पराधीनता और धन लिप्सा के कारण घरवाला अमानवीय एवं अंधविश्वासी बन गये। दादी ने भी इतनी अमानवीय प्रवृत्तियों को ढेलने पर भी नहीं बताया कि करधन कहाँ है। यह चुप्पी भी दादी का प्रतिरोध है। वास्तव में उनके पास करधन नहीं था। घर की स्त्रियाँ आवाज़ उठाकर बोलती हैं - "अब तो घर की ईंट बेचने तक की नौबन आ गई है किसी के पेट में दाना नहीं है, रामे ने पैसा देना बंद कर दिया। कोई सोना लेकर स्वर्ग नहीं जा सकता रात में ही यमदूत छीनकर भैस के पेट में डाल देते हैं। या वह नहीं रह जाता है। ऐसे सोना, जिसके रहते बच्चा भूखा मर जाए वह गू हो जाता है। दीमक उसे खा जाती है।"[2] अर्थ प्रधान युग में केवल संपत्ति की चिंता मात्र है, रिश्तों की

---

1. उदय प्रकाश - छप्पन तोले का करधन - पृ. 52
2. वही - पृ. 16

प्रमुखता नहीं है। कहानी इस प्रकार सोचने के लिए मज़बूर करती है कि भगवान किसी को ऐसा बुढापा दिखाने के पहले ही उठा ले।

अमानवीय प्रवृत्तियाँ तीव्र होने पर भी दादी की मृत्यु हुई। उनके बेटे रामे ने करधन की तलाश की। अधिकारी कोठरी में करधन न मिलने के कारण वह अपने घर को खोदने लगा। घरवालों के रोकने पर वह रुकता नहीं। दादी का बेटा रामे अपने बुढापे के प्रति चिंतित होकर कहता है - "मुझे तो डर लगता है कि अगर मैं बूढा और बीमार हो गया तो इस घर में मेरे साथ क्या किया जाएगा। मैं उसी से बता दूँ कि मेरे पास नहीं है कोई करधन। अपना खून बेचकर मैं तुम सबको पाल रहा हूँ, मुझ पर रहम करना....।"[1] अर्थात अपने भविष्य के प्रति सचेत होकर अपनी बूढी माँ के दारुण वर्तमान के प्रति अचेत आज की पीढी है रामे। याने कि अपने माता-पिता को दयनीय पीडा के सत्य को भूलकर अपने वार्द्धक्य की सुरक्षा की प्रार्थना करनेवाली है नई पीढि। वास्तव में यह तो समय का सबसे बडा विरोधाभास है। 'मौसाजी', 'थर्ड डिग्री' जैसी कहानियों में वृद्ध जीवन का यथार्थ हम देख सकते हैं।

5.12 इतिहास-बोध

इतिहास में 'इति' शब्द प्रत्यक्ष निर्देश को बताता है, 'ह' शब्द आगम या परंपरोपदेश की सूचना देता है और 'आस' का अर्थ है आसन अथवा प्रतिष्ठा। इस प्रकार अतीत काल के वृत्तान्तों को प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित करनेवाला तत्व

---

1. उदय प्रकाश - छप्पन तोले का करधन - पृ. 17

इतिहास है। इतिहास के लिए अंग्रेज़ी में 'हिस्ट्री' शब्द है जिसका मूल अर्थ है 'अन्वेषण' अथवा अन्वेषण से प्राप्त ज्ञान। इतिहास अतीत के अज्ञात जीवन एवं घटनाओं को सामने लाता है। बनडोटो क्रोचे के मुताबिक "हमारा इतिहास हमारी आत्मा का इतिहास है और मानव आत्मा का इतिहास विश्व का इतिहास है।"[1] वर्तमान हमारा प्रत्यक्ष रहता है, अतीत को जानने के लिए इतिहास का सहारा लिया जाता है, तथा भविष्य को कल्पना से निर्मित किया जाता है। साहित्य अतीत के जीवन को चित्रित करते समय इतिहास पर आश्रित रहता है।

5.12.1 इतिहास-बोध की परिभाषाएँ

समसामयिक घटना चक्र से केन्द्रीय मूल्य संवेदना उभरती है, वही साहित्य का इतिहास बोध है। इतिहास बोध पर विचार करते हुए डॉ. शिवकुमार मिश्र कहते हैं - "साहित्येतिहास लेखन हो या कोई भी इतिहास लेखन, वह मात्र तथ्यों का संकलन नहीं, वरन ऐसे तथ्यों का संयोजन व्यवस्थापन और मूल्यांकन है, जो किसी युग या साहित्य विशेष की आन्तरिक गतिविधियों से संबन्ध ऐसे नियमों के द्वारा अनुशासित तथा संचालित होते हैं, जिनके कारण ही वे तथ्य सतह पर उजागर होते हैं तथा जिन आन्तरिक नियमों को जाने बिना न तो उन तथ्यों की सम्यक व्याख्या की जा सकती है, न ही उस युग या साहित्य विशेष के इतिहास में उनकी निर्णयात्मक भूमिका से परिचित हुआ जा सकता है।"[2]

---

1. बेनडोटो क्रोचे - हिस्ट्री इज द स्टोरी ऑफ लिबर्टी - पृ. 117
2. आलोचना - अंक 48, जनवरी-मार्च 1979 - पृ. 94

डॉ. राजेश्वर सक्सेना के मुताबिक - "इतिहास और यथार्थवाद में युग सापेक्ष संस्कृति की वस्तुपरकता को पहचाना जा सकता है, इसे तुलनीय बनाया जा सकता है, चूँकि इतिहास की कालसापेक्ष संस्कृति की आँख है, जीवन चेतना का प्रत्यक्ष दर्शी है और भविष्य की संभावनाओं का व्याख्याता, विश्लेषक और मीमांसक है।"[1] राजशेखर सक्सेना ने ठीक ही कहा है कि इतिहास द्वारा युग की संस्कृति एवं समाज को पहचान सकते हैं।

साहित्यकार तो इतिहास की नीरसता को तोडता है, दबे मृत संदर्भों का पुनर्वास करता है, नयी अर्थवत्ता देता है, जिसमें उनकी निजी चेतना कार्य करती है। यही उसका इतिहास बोध है। इतिहास को नवीन गत्यात्मक संभावनाएँ तो रचनाकार ही देता है। डॉ. नामवर सिंह भी इसे इसी परिप्रेक्ष्य में स्वीकारते हैं - "सामाजिक सत्य को साहित्यकार नवीन-नवीन चित्रों और मूर्तियों, मर्म छवियों में गढता है, मृत व्यक्तियों और घटनाओं को भी पुनर्जीवित करता है, जड पदार्थों को भी सजीव करता है, पेड के पत्तों को जुबान देता है और स्थिर पत्थर में संवेदनशीलता।"[2]

समकालीन रचनाकार उदय प्रकाश समाज में व्याप्त विसंगतियों के विरुद्ध लेखनी उठाते हैं तब इतिहासबोध का ज्ञान होना अवश्य ही है। रचना में निहित इतिहास-बोध उसे कालजयी बनाता है। एवं व्यापकता देता है। इतिहास की धडकन उनकी रचनाओं में हम देख सकते हैं। इसका मिसाल हैं 'पॉलगोमरा का स्कूटर', 'वॉरेन हेस्टिंग्स का साँड', 'मोहनदास', 'भीमसेन त्यागी प्रसंग 1984' आदि।

---

1. राजेश्वर सक्सेना - इतिहास, विचारधारा और साहित्य - पृ. 20
2. नामवर सिंह - इतिहास और आलोचना - पृ. 145

उदय जी अपनी चर्चित कहानी 'वॉरेन हेस्टिंग्स का साँड' में वॉरेन हेस्टिंग्स को इतिहास से चुन लिया है। वह तो हिन्दुस्तान का पहला गवर्नर जनरल था। लार्ड क्लाइव के बाद उसने ईस्ट इंडिया कंपनी को संभाला। उसकी प्रशासनिक नीतियाँ ही वास्तव में दो-सौ वर्षों के लिए हमारे ऊपर छायी हुई है। कहानी उनकी अमानवीय प्रवृत्तियों को साकार करती है। वह हमारी संस्कृति से अभिभूत एवं आतंकित भी है। वॉरेन हेस्टिंग्स अपने आस-पास की हर चीज़ को विदेशी निगाह से देखने की कोशिश करता है। कहानी के बीच में उदय जी ने साफ साफ बताया है कि मुगल-शासकों की तरह इस मिट्टी में एक रंग होकर धुल जाना उसका लक्ष्य नहीं है लेकिन फिर भी कुछ ऐसा अवश्य है जो उसे सम्मोहित करता है।

अंग्रेज़ों के साथ यहाँ के हिन्दुस्तानी लोग भी थे। वे स्वार्थ-प्रेरित हिन्दुस्तानी थे जो इस शोषण चक्र को पूरा करने में सहायक थे। वे अंग्रेज़ों को खुश करने एवं उनका विश्वास हासिल करने में सब कुछ करते हैं। उदय जी संकेत करते हैं कि ये लोग अधिकतर उच्च जाति के हिन्दू थे जो अपने रहन-सहन, खान-पान पहनावे और भाषा, सभी में अंग्रेज़ होने की कोशिश कर रहे थे। उदय जी ने यह भी बताया है कि देश का नक्शा बनाकर औपनिवेशिक व्यवस्था का विस्तार किया, स्थाई भूमि बंदोबस्त एवं नये नियम लागू किया, इनके नहत यहाँ अंग्रेज़ी शासन सुदृढ़ हुआ। उन्होंने अपनी कहानी में शोषण और बर्बरता का इतिहास बार-बार दोहराया है।

कहानी में सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में गाय और साँड को अपनाया जाता है। इसलिए हम निस्संदेह कह सकते हैं कि कहानी का संबन्ध हिन्दू पुनरुत्थान से

जुडा हुआ है। वॉरेन हेस्टिंग्स अपने मित्र मिस्टर हमहाँफ को पत्र लिखकर बताते हैं कि जिन गाय बैलों को 'कैटल' कहा जाता है यहाँ उनकी पूजा की जाता है। उनके नाम होते हैं, वे जानवर नहीं, मनुष्य है। इग्लैंड जैसे औद्योगिक समाज के लिए वे पशु थे, उनकी पहचान नहीं। लेकिन भारत में वे नामधारी समाज-स्वीकृत पहचान के अधिकारी हैं। इसलिए उनमें करुणा होती है।

उदय प्रकाश जानबूझकर अनेक पाठों के ज़रिए उपनिवेशवादी अन्तर्क्रियाओं को समझाने की कोशिश करते हैं। उदय जी ने विक्टोरिया मेमोरियल में रखे एक चित्र का विवरण दिया है जिसमें वॉरेन हेस्टिंग्स की पत्नी के साथ एक नेटिव लड़की दिखाई पड़ती है। वास्तव में इस नेटिव लडकी को 'चोखी' नाम देकर कहानी आगे बढ़ती है। गुलाम जनता का प्रतिनिधि है चोखी, लेकिन वे प्रतिरोधी है या 'काली' है। उदय प्रकाश अपनी कहानी के बारे में यों बताते हैं - "वॉरेन हेस्टिंग्स 1772 में गवर्नर बना था और जो रिकार्डेड हिस्ट्री में है, वह बिल्कुल वैसा नहीं है क्योंकि वॉरेन कभी पागल नहीं हुआ, वह कभी गाय के पीछे नहीं भागा, कभी उसने कृष्ण का रूप धरकर बाँसुरी नहीं बजाई, कभी सबकुछ कल्पना और स्वप्न था। ...एक मिथ क्रिएट किया कोलोनियलाइज़ेशन का, जिससे हमारे देश के उपनिवेशीकरण की जो अंतर्क्रिया है, उसको हम समझ सकें.... उसको थोड़ा सा जान सकें। इसमें युक्ति कहाँ से आई....? अब हर लेखक के सामने वह गुत्थी होती है, जिसको अपनी तरह से सुलझाता है।"[1] इसीसे हमें पता चलता है कि कहानी का

---

1. शीतलवाणी - आगस्त-अक्तूबर 2012 - पृ. 15

केन्द्रीय पात्र वॉरेन हेस्टिंग्स होने के कारण परिवेश उस समय का है। उस समय की शासन प्रणालियाँ, अंग्रेज़ नियुक्तियाँ, अमीर हिन्दुस्तानियों के व्यवहार आदि के जो विवरण दिए है। हमारी संस्कृति और परंपरा का विवरण हैं। इसके ज़रिए लेखक का उद्देश्य हमें साफ साफ दिखाई देता है। कहानी में चित्रित शासन आज भी है, हमारी भाषाएँ, चिंताएँ सब अंग्रेज़ी हो गईं। 'वॉरेन हेस्टिंग्स का साँड' कहानी उत्तर-औपनिवेशिक समय और समाज की गंभीर आलोचना है। कहानी में फ्रांसीसी जनरल टुटले का कथन विशेष उल्लेखनीय है कि जब हम इंडिया को छोड यूरोप लौट जायेंगे तो तब भी वहाँ हमारी गुलाम छायाएँ राज करेंगी। आज यह बात सत्य हो चुकी है।

भूतकाल की घटनाओं का विवरण मात्र इतिहास नहीं देता, वह उन घटनाओं की परिस्थितियों और परिणामों को भी दिखाता है। उन घटनाओं के माध्यम से उपदेश या संदेश भी संप्रेषित किया जाता है। उदय जी भोपाल ग्यास ट्राजडी की याद हमें 'भीमसेन जोशी प्रसंग 1984' कविता द्वारा दिलाती है। इतिहास भोपाल ग्यास ट्राजडी का साक्षी है। 1984 दिसंबर 3 को भयानक औद्योगिक दुर्घटना हुई। गैस रिसाव के आठ घंटे बाद भोपाल को ज़हरीली गैस के असर से मुक्त मान लिया गया था। लेकिन आज भी इसका प्रभाव समाप्त नहीं हुआ। कारखाने के आसपास के अधिकांश लोग नींद में ही मौत का शिकार बने। सरकारी आँकडों के मुताबिक इस दुर्घटना के कुछ ही घंटों के भीतर तीन हज़ार से ज़्यादा लोगों की मृत्यु हो चुकी थी। यह दुनिया के औद्योगिक इतिहास की दुर्घटना थी। उदय जी इस प्रकार की भीषण प्रवृत्तियों के प्रति यों बोलते हैं-

गर्भ में ही मृत शिशुओं के मार डाले गये भविष्य के शोक में
गाओ
जहरीले कारखाने, परमाणु अस्त्रों और नक्षत्र युद्धो के खिलाफ।"[1]

ज़हरीले पदार्थों से भूमि प्रदूषित होती है। लोग बडे बडे रोगों के शिकार बनते हैं। इस कटुयथार्थ को हमारे सामने लाने के लिए इतिहास की दुर्घटना को चुन लिया गया है।

'मोहनदास' कहानी का नायक 'मोहनदास' हमें गाँधीजी की याद दिलाता है। इतिहास पुरुष 'गाँधी' को उदय जी विकल्प के रूप में स्वीकार करते हैं। 'मोहनदास' भी अंत तक सच्चाई के पक्ष में थे। लेकिन सत्य के ऊपर असत्य की जीत कहानी में हम देख सकते हैं। गाँधीजी के समान नायक (मोहनदास) हार जाता है। मोहनदास हार को मानकर बताता है कि - "जिसे बनना हो बन जाए मोहनदास। नहीं हूँ मोहनदास। मैंने कभी नहीं से बी.ए. नहीं किया। कभी टॉप नहीं किया। मैं कभी किसी नौकरी के लायक नहीं रहा। बस मुझे चौन से रहने दिया जाए...।"[1] अर्थात अपनी अस्मिता के संघर्ष के बदले उसे षड्यंत्र के चक्रव्यूह में वह अकेला यंत्रणा भोगने के लिए खडा है। 'मोहनदास' में गाँधी के परिवारों का नाम प्रयुक्त किया है। मुक्तिबोध, शमशेर जैसे कवि भी पात्र बनकर आते हैं। आज इतिहास का अंत घोषित करनेवालों का विरोध उदयप्रकाश पॉल गोमरा का स्कूटर में करते हैं।

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - भीमसेन शास्त्री प्रसंग 1984 - पृ. 87
2. उदय प्रकाश - मोहनदास - पृ. 42

वैसे ही उनकी कई कहानियों में गाँधीजी पात्र बनकर आते हैं जो समय की प्रासंगिकता को द्योतित करते हैं। इसलिए इतिहास, वर्तमान एवं भविष्य की अटूट श्रृंखला उदय प्रकाश के अनुसार विकास सूचक है।

सारांश यह है कि इतिहासबोध से युक्त रचनाओं में वक्त की धडकन है। इतिहासबोध के ज़रिए उदय प्रकाश पाठक को अपने समकालीन सत्य, अतीतकालीन संस्कार और संभावनीय भविष्य से परिचय कराते हैं। यह उनकी सार्थकता है।

5.13 निष्कर्ष

उदय प्रकाश अपनी रचनाओं में आज के जीवन-संदर्भ के अनेक पहलुओं का अनावरण करते हैं। प्रकृति, सांप्रदायिक दंगे, प्रेम, घर-परिवार, गाँधी चिंतन, शिक्षा का औद्योगीकरण आदि पर विचार करते हुए उनके प्रतिरोध का मार्ग भी प्रशस्त किया जाता है। आज भूमंडलीकरण तथा उससे उत्पन्न अमानवीय वातावरण में जीने के लिए अभिशप्त हम जैसे लोगों के सामने जो डरावना वातावरण है उसका परत दर परत खोलकर प्रस्तुत करने का साहस उदय जी की सबसे बडी सराहनीय खासियत है।